

मीर जाफर

प्रमोद कुमार अग्रवाल

मीरजाफर

प्रमोद कुमार अग्रवाल

प्रमोद कुमार अग्रवाल

सन् १९५० फरवरी में जन्में प्रमोद जी भारतीय प्रशासनिक सेवा में होते हुए भी हिन्दी कथा—जगत के नवोदित हस्ताक्षर हैं। इनका प्रथम आंचलिक उपन्यास 'बेतवा की कसम' तथा 'प्रेम से परिवार तक' बहुचित हो चुका है।

लेखक के प्रस्तुत उपन्यास 'मीरजाफर' में अंग्रेजों की कूटनीति एवं सत्ता-लोलुपता का विश्लेषण सरस भाषानुभूति के माध्यम से किया गया है। 'मीरजाफर' इतिहास का एक निन्दनीय पात्र है। पर उसका क्या दोष था ? दोष था उस व्यवस्था का जिसने उसे देशद्रोही बनने के लिए विवश किया। हमारा कर्तव्य है कि हम अपनी व्यवस्था में ऐसे दुर्गुण न पनपने दें जो 'मीरजाफरों' को जन्म दे।

संपर्क-सूत्र

क्षेत्रीय निदेशक उ० प्र०

गंगा परियोजना निदेशालय

द्वितीय तल, चन्द्रशेखर आजाद मार्केट

सिविल लाइन, इलाहाबाद २११००१

प्रचारक बुक क्लब

हिन्दी प्रचारक संस्थान

पो०बा० ११०६, पिशाचमोचन, वाराणसी-२२१००१

मीरजाफर



भारत के प्रथम बुक क्लब
प्रचारक बुक क्लब
हिन्दी प्रचारक संस्थान
पो० बा० ११०६, वाराणसी के लिए
विजय प्रकाश बेरी द्वारा प्रकाशित तथा
उर्मिला प्रेस, मीरापुर बसही वाराणसी में मुद्रित
सन् १९८८

मूल्य : ५.००

MEER JAFAR

Novel

Pramod Kumar Agrawal

: १ :

बंगाल, बिहार एवं उड़ीसा के नायब नाजिम एवं पलाशी युद्ध के खलनायक मीरजाफर पैगम्बर के वंश से सम्बन्धित थे। हजरत अली के साथ पैगम्बर की एकमात्र कन्या फतेमा का विवाह हुआ। उसके दो पुत्र इमाम हुसैन एवं हुसैन थे। बड़े पुत्र इमाम हुसैन के लड़के का नाम था हुसैन मसान्न एवं छोटे लड़के हुसैन की लड़की का नाम था फतेमा शाप्रा। हुसेन मसान्न के साथ फतेमा शाप्रा का विवाह हुआ एवं उनके वंशधर दीर्घ-काल तक शरीफ के पद पर प्रतिष्ठित थे। हुसैन मसान्न के लड़के का नाम था इब्राहीम। मीरजाफर इब्राहीम वंश के थे।

मिरजा इब्राहीम के वंशधर बहुत समय तक अरब एमान प्रदेश के शासनकर्त्ता थे। इसी वंश के सैयद हुसैन नजाफि हज-रत अली की समाधि के रक्षक थे। नजाफे में रहने के कारण उनके नाम के साथ नजाफि जुड़ा। सैयद हुसैन के लड़के सैयद आमेद नजाफि हुसैन मीरजाफर के पिता थे। जाफरागंज में मीरजाफ़र के वंश की कब्रों में सैयद आमेद नजाफि की भी कब्र है।

जब मुगलों के वंशज नजाफे गये तो उन्होंने हजरत अली की कब्र के संरक्षकों को भारत आने का निमन्त्रण दिया। औरंगजेब भी इस्लाम धर्म में अपार श्रद्धा रखता था। अतः उसने भी विशेष दूत भेजकर सैयद हुसैन नजाफि को भारत आने का निमन्त्रण दिया। तीर्थ-यात्रियों से भारत के विषय में

अभूतपूर्व कहानियाँ सुनकर उनके दिल में सोने की चिड़िया भारत का दर्शन करने की अपार लालसा जाग्रत हो उठी थी। अतः सैयद हुसैन नजाफि भारत आये। औरंगजेब दिल्ली में उनके घोड़े की लगाम पकड़कर लाये एवं उन्हें बादशाही सिंहासन पर बैठाया। उनके साथ दाराशिकोह की लड़की अर्थात् बादशाह औरंगजेब की भतीजी का विवाह सम्पन्न हुआ। उसके पश्चात् सैयद हुसैन नजाफि के लड़के एवं अन्य सम्बन्धियों को बादशाह के अधीन नौकरी मिली। मीरजाफर के एक चाचा को ग्वालियर दुर्ग का कार्यभार सौंपा गया एवं उसका एक अन्य चाचा कटक का फौजदार नियुक्त हुआ। मीरजाफर पूर्वी भारत में अपने चाचा के साथ कटक आया एवं उनके शासन में काम करते हुए उसने अत्यधिक ख्याति अर्जित की। वह एक कुशल योद्धा एवं स्वामिभक्त सिपाही के रूप में जाना जाने लगा। यद्यपि मीरजाफर की शिक्षा-दीक्षा कोई खास नहीं थी पर युद्ध शस्त्र विद्या में वह पारंगत था विशेषतया युद्ध के मैदान में। अलीवर्दी एक कुशल एवं योग्य व्यक्ति थे। उनके हृदय में सम्पूर्ण भारत का सरताज बनने की अभिलाषा हिलोरें मार रही थीं, अतः वे अपने इर्द-गिर्द स्वामिभक्त, विश्वसनीय एवं योग्य योद्धा रखना चाहते थे। उन्होंने मीरजाफर को चुना एवं अपनी बहिन शाह खानूम का विवाह कर दिया। नवाब अलीवर्दी ने मुर्शिदाबाद की गद्दी पर सन् १७४१ में बैठते ही मीरजाफर को अपना सेनापति नियुक्त किया। फ्रांसीसी आक्रमण के समय एवं मराठों के विरुद्ध मीरजाफर ने यथेष्ट बुद्धि एवं शक्ति का परिचय दिया। नवाब अलीवर्दी मीरजाफर पर बहुत विश्वास करते थे। मीरजाफर ने भी अपने नवाब के विश्वास को प्राप्त करने के लिए कठोर परिश्रम एवं साहस का परिचय दिया।

वास्तव में मीरजाफर दिल्ली सल्तनत के प्रतिनिधि थे एवं दिल्ली बादशाह ने उन्हें मराठों का दमन करने के लिए भेजा था क्योंकि मराठे आक्रमण करके एवं चौथ वसूल करके चले जाते थे एवं बंगाल, बिहार एवं उड़ीसा के छोटे-छोटे राजा, महाराजा एवं नवाब उनसे परेशान थे। फलस्वरूप वे मुर्शिदाबाद के नवाब एवं दिल्ली के बादशाह को उपयुक्त राजस्व नहीं दे पाते थे। मीरजाफर की सेना का चिह्न 'मारी मराती' था अर्थात् पंजा एवं मछली जिससे वे दिल्ली के प्रतिनिधि के रूप में पहचाने जाते थे।

मराठों से 'बर्गी की हवेली' में प्रसिद्ध युद्ध भी हुआ एवं उस युद्ध में मीरजाफर के भाई ने मराठों को वहाँ पर बुरी तरह से पराजित भी किया एवं उनका सेनापति भास्कर पंडित भी इस युद्ध में मारा गया। इससे अलीवर्दी खाँ मीरजाफर पर बहुत प्रसन्न हुए एवं उन्होंने मीरजाफर को 'जाफरगंज महल' बनवाकर दिया जो मीरजाफर का अन्त तक आवास स्थल रहा। नवाब अलीवर्दी खाँ ने दिल्ली बादशाह को लिखा।

"मीरजाफर यहीं रहेंगे क्योंकि अभी भी हमें मराठों से खौफ है।"

मीरजाफर का भी सैयद वंश के वंशज होने के कारण अति सम्मान था। अलीवर्दी की बहिन से विवाह एवं इस साम्राज्य की समृद्धि को देखकर मीरजाफर का मन भी मुर्शिदाबाद में रम गया एवं वह मुर्शिदाबाद के नवाब बनने का स्वप्न देखने लगा।

□

: २ :

सन् १७४७ में अलीवर्दी ने मीरजाफर को मराठों का दमन करने के लिए भेजा एवं मीरजाफर को सिपहसालार की पदवी दी। उन्होंने मीरजाफर को १८ परगनों की एक जागीर भी दी जो कि सेनापति के नाम पर थी। उसका नाम था जायगीर अमीरुल उमरा बक्शी। मीरजाफर के सीधे नियन्त्रण में कुछ जमींदार भी थे एवं नवाबी सेना को चलाने के लिए जमीन की आमदनी भी थी। इस प्रकार मीरजाफर का परिचय बंगाली जमींदारों से हुआ एवं उन्होंने ही मीरजाफर की आदतें विगाड़ना प्रारम्भ की ताकि वे सेनापति की चाटुकारिता करके अपनी मनमानी करते रहे। वे प्रधान सेनापति के नाम पर इच्छामात्र राजस्व वसूल करते थे। अलीवर्दी खाँ भी मीरजाफर के विरुद्ध शिकायतें नहीं सुनना चाहते थे, क्योंकि वे मीरजाफर को अपना दामाद मानकर खूब प्रेम एवं विश्वास करते थे।

अलीवर्दी खाँ ने मीरजाफर को मेदिनीपुर मराठों का दमन करने के लिए भेजा पर वह वहाँ पर विलासिता के पंक में डूब गया। मीरजाफर एक सीधा एवं सरल व्यक्ति था एवं उसे बहादुरी दिखाने एवं ऊँचा पद प्राप्त करने की प्रकट अभिलाषा नहीं थी एवं न ही वह अपने को बहादुर कहलाने में शान समझता था। मीरजाफर की ओर से कोई समाचार न प्राप्त करके अलीवर्दी ने अताउल्ला को भेजा पर दोनों मिल गये एवं दोनों ने अलीवर्दी खाँ को खत्म करने का निश्चय किया

तय किया कि अताउल्ला मुर्शिदाबाद का नवाब एवं मीर-जाफर पटना का राजा क्रमशः बनेंगे।

अलीवर्दी खाँ ने विलम्ब देखकर स्वयं मेदिनीपुर प्रस्थान किया एवं दोनों ने अलीवर्दी खाँ के सामने आत्मसमर्पण किया। अलीवर्दी खाँ ने दोनों को पदच्युत किया। सभी ने कहा 'मीर-जाफर' एक मृदु स्वभाव का व्यक्ति है पर वह विलासप्रिय एवं स्वार्थपरायण है। पर अलीवर्दी ने अपनी सहृदयता के कारण मीरजाफर को कोई दण्ड नहीं दिया। अलीवर्दी खाँ जैसे कुशल शासक के लिए यह एक महान भूल थी। उसके फलस्वरूप मीर-जाफर का षड्यंत्र करने के लिए और हृदय चौड़ा हो गया।

सिराजुद्दौला अलीवर्दी खाँ की सबसे छोटी लड़की अमीना बेगम का बड़ा पुत्र था। अलीवर्दी खाँ के कोई पुत्र नहीं था। सिराजुद्दौला छह फीट २ इंच लम्बा एवं देखने में एक अत्यन्त वीर एवं प्रभावशाली व्यक्ति था। अतः अलीवर्दी खाँ का सम्पूर्ण प्रेम अपने पौत्र सिराजुद्दौला पर ही केन्द्रित था। सिराजुद्दौला ने बचपन से ही अपनी तीक्ष्ण बुद्धि एवं अद्भुत वीरता का कई अवसरों पर परिचय भी दिया। अतः सभी उसे अलीवर्दी खाँ का उत्तराधिकारी एवं उनके मरने के बाद मुर्शिदाबाद की मसनद का सर्वसम्मत नवाब समझते थे। अतः दासियों एवं चाटुकारों ने सिराजुद्दौला को बिगाड़ना शुरू किया एवं बारह वर्ष की आयु में ही पहुँचने पर वह इन्द्रिय-परक एवं विलासप्रिय बन गया एवं अत्यधिक मद्य सेवन करने लगा। उसके उस खेल के साथ देने वाले वे सभी व्यक्ति थे जो उसके नवाब होने पर उच्च पदों के आकांक्षी थे अथवा जो वेश्याएँ स्वयं को मलिका बनने का स्वप्न देखा करती थीं। उसका अत्यधिक लगाव भी

इस अल्पवयस्क में लुत्फुन्निसा नाम की एक बाँदी की लड़की से हो गया एवं वह अपने को उसके प्यार में खो बैठा। लुत्फा भारतीय सुन्दरता की स्वर्णिम प्रतिमा थी। वह बाईस सेर वजन की कोमलांगना थी। जब वह पान खाती थी तो गले से नीचे तक उसकी शरीर में लाल पीक नजर आती थी। अपने इर्द-गिर्द चाटुकारों एवं लुत्फुन्निसा की प्रेरणा से उसने "हीरा-झील" नामक एक भव्य एवं बहुमूल्य प्रासाद को निर्माण करवाया जो अलीवर्दी खाँ के नवाबी महल से कई सा गुना श्रेष्ठ था। प्रासाद भागीरथी (गंगा) के किनारे स्थित था एवं उसमें हिन्दू, चीनी, मुस्लिम, फारसी चित्रकला का सुन्दर संयोग था। अलीवर्दी खाँ की उम्र बढ़ रही थी एवं वृद्धावस्था में वे राजकार्य कम ही देख पा रहे थे एवं पौत्र के लिए अपने अंध-प्रेम के कारण सिराज की इन सभी मनचली हरकतों का विरोध नहीं कर रहे थे। हीरा-झील के निर्माण में अत्यधिक ऋण हो गया था। अतः सिराजुद्दौला ने एक चाल चली। उसने अपनी मित्र मण्डली की सलाह पर वृद्ध नवाब एवं बेगम को हीरा-झील के उद्घाटन के लिए बुलाया एवं अलीवर्दी खाँ महल की भूलभुलइया में रास्ता भूल गये एवं व्यग्र होकर चिल्लाने लगे। उन्होंने कहा. 'सिराज, मुझे बचाओ! तुम्हारी जो इच्छा हो मैं पूरी करने को तैयार हूँ।' सिराज ने कहा, 'नवाब, तुम्हारे दीवान एवं धन के कोष जगतसेठ के यहाँ हैं। उनसे कहो कि नवाब की जान बचाने के लिए महल बनवाने में पूरा खर्चा शोध कर दें।' नवाब अलीवर्दी ने कहा, 'जगतसेठ, जैसा सिराज कहता है, तुम करो।' जगतसेठ को 'नवाब के प्रति अत्यन्त श्रद्धा एवं प्रेम था। जगतसेठ ने एक क्षण भी प्रतीक्षा न करते हुए कहा, नवाब 'आपकी जैसी आज्ञा। मैं कल ही 'हीरा-झील' के निर्माण में लागत सभी खर्चे को चुका दूँगा।'

इस घटना के बाद भी अलीवर्दी खाँ की आँखें न खुलीं। शायद उस समय के परिवेश में अन्य लोग इससे भी खराब थे।

अलीवर्दी के इस क्षमादान ने सिराजुद्दौला के अन्याय का मस्तक और भी ऊँचा कर दिया। अब वह अपने नवाब होने के रास्ते में आने वाली सभी सम्भव बाधाओं का निराकरण करना चाहता था। अलीवर्दी खाँ की सबसे बड़ी लड़की घसीटी बेगम ने अपने पति नवाजिस खाँ के मृत्यु के पश्चात् सिराजुद्दौला के भाई इकरामउद्दौला को गोद लिया एवं वह ढाका से अपने स्वामी के सेनापति एवं अपने प्रेमी और रक्षक शमशेर खाँ के साथ मुर्शिदाबाद में ही आकर रहने लगी। उसने ढाका की जागीर की आमदनी से 'हीरा-झील' की टक्कर का 'मोती झील', महल बनवाया एवं उसमें वह विलासिता एवं चरित्र-हीनता का जीवन व्यतीत करने लगी।

शरीयत के अनुसार अलीवर्दी खाँ की मृत्यु के पश्चात नवाब की गद्दी का प्रथम अधिकार घसीटी बेगम एवं उसके नाबालिग एवं गोद लिये लड़के इकरामउद्दौला को था। अतः एक दिन 'हीराझील' में बुलाकर सिराजुद्दौला ने अपनी मित्र-मण्डली के सान्निध्य में बातों-बातों में शमशेर खाँ का कत्ल कर दिया एवं उसके पश्चात इकरामउद्दौला एवं उसके शिक्षक का भी कत्ल कर दिया। सिराज के इस कुकृत्य से वृद्ध अलीवर्दी खाँ अति दुःखी हुए एवं न्यायप्रिय अलीवर्दी खाँ ने कहा, 'इस्लाम धर्म के अनुसार खून का बदला खून है। अतः सिराज के जीवन के अन्त से ही यह न्याय हो सकता है।'

अलीवर्दी खाँ के इस निर्णय से सम्पूर्ण राज्य मुर्शिदाबाद में खलबली मच गयी, क्योंकि सिराजुद्दौला पहिले से ही नवाब घोषित हो चुका था। अलीवर्दी खाँ ने विश्वासपात्र मीरजाफर

को इस परिस्थिति से निपटने के लिए बुलाया एवं उसकी सलाह ली। मीरजाफर ने अलीवर्दी खाँ से कहा,—"यदि आप सिराज-जुद्दौला को कत्ल कर देंगे तो कौन नवाब बनेगा? इससे एक राजनैतिक शून्यीकरण होगा जिससे हमारे शत्रु लाभ उठायेंगे।"

मीरजाफर की सलाह पर अलीवर्दी ने सिराजुद्दौला को माफ किया पर अलीवर्दी ने मीरजाफर से वायदा करवाया, "तुम मेरे मरने के बाद सिराजुद्दौला को नवाब बनने में सहयोग करोगे।" तुम कुरान की कसम खाकर बोलो।

मीरजाफर ने कुरान की कसम खाकर अलीवर्दी को सिरा-जुद्दौला को नवाब बनाने के लिए पूर्ण सहयोग का वायदा किया, क्योंकि मीरजाफर अलीवर्दी के सिराज के प्रति अगाध आन्त-रिक प्रेम को समझता था और अलीवर्दी खाँ भी समझता था, कि यदि वह सिराज के प्रति मीरजाफर, जगतसेठ एवं दीवान रायदुर्लभ की स्वामिभक्ति को जीत लें तो उसके प्रिय पात्र एवं पौत्र और मुर्शिदाबाद के भावी नाबालिग नवाब सिराज का शासन बिना किसी बाधा के सुचारु रूप से संचालित हो जायेगा, क्योंकि ये तीन व्यक्ति ही उस समय के सर्वाधिक शक्ति-शाली व्यक्ति थे।

उधर हाजी अहमद एवं जैनुद्दिन खाँ पर पटना के शासन का भार था। उन्होंने अफगानों को निमन्त्रण दिया ताकि वे अफगानों की सहायता से अलीवर्दी को मार दें और सिराजुद्दौला शीघ्र ही मुर्शिदाबाद का नवाब बनें। अफगानों ने पटना पर आक्रमण न करके उल्टे ही सिराज के पिता जैनुद्दिन का वध कर दिया एवं कहा जाता है कि मुस्तफा खाँ, अलीवर्दी के नौकर ने जैनुद्दिन का कत्ल कर दिया था। आत्मग्लानि वश हाजी अहमद

ने भी आत्महत्या कर ली। सिराजुद्दौला की माँ आमिना बेगम अफगान शिविर मे बन्दी हो गयी। अलीवर्दी ने मर्माहत होकर मीरजाफर को फिर से पूरी सेना का सेनापति बनाकर राज्य की रक्षा का भार दिया। पर उड़ीसा में महाराष्ट्र की ओर से मराठों का आधिपत्य हो गया एवं अलीवर्दी पटना न जा सकें।

राजधानी मुर्शिदाबाद की रक्षा करने के लिए उन्होंने सैयद अहमद को भगवान गोला भेजा। नवाजस एवं आताउल्ला के पास पाँच-पाँच हजार सैनिक रखकर राजधानी की रक्षा का भार सौंप दिया एवं बोल दिया, 'आप लोग अपनी रक्षा स्वयं करें। बस सभी जनता भाग निकली।

भाग्यवश लूटपाट करने के पश्चात् अफगान एवं मराठे अपने-अपने स्थानों को वापिस चले गये एवं अलीवर्दी की मृत्यु हो गयी पर वे मृत्यु के पूर्व सिराजुद्दौला को विधिवत नवाब बना गये। मृत्यु शैया पर अलीवर्दी ने सिराजुद्दौला से कहा कि तुम इन बातों की प्रतिज्ञा करो—"अत्यधिक शराब नहीं पिओगे एवं जरियाओं के पीछे नहीं रहोगे।" उन्होंने आगे कहा, तुम मीरजाफर, जगतसेठ एवं रायदुर्लभ से मेल रखना। अंग्रेजों की शक्ति जो पूर्वी भारत में उदय हो रही है वह तुम्हारे शासन के लिए सबसे बड़ा खतरा है। वे बहुत कूटनीतिज्ञ एवं वीर हैं। तुम अंग्रेजों को हिन्दुओं, मुसलमान बादशाहों, जागीरदारों एवं अन्य सभी के सहयोग से ही इस देश से निकाल सकते हो। सभी का सहयोग प्राप्त करो।

अलीवर्दी ने मरते समय मीरजाफर, जगतसेठ एवं रायदुर्लभ से कुरान की कसम लेते हुए कहा, "तुम सभी लोग मेरे राज्य के निर्माता एवं मेरे अन्यतम सहयोगी एवं सलाहकार रहे हो। तुम सब लोग मेरे प्रिय पौत्र और मुर्शिदाबाद के नाजिम नवाब सिराजुद्दौला को भी पूर्ण सहयोग करना।"

मीरजाफर, जगतसेठ एवं रायदुर्लभ ने कहा, "नवाब साहब आपकी अन्तिम इच्छा हमें प्राणपण से शिरोधार्य है। आप जाइये एवं हम पर विश्वास रखिए। हम मुर्शिदाबाद के नवाब के विरुद्ध विद्रोह नहीं करेंगे।"

□

: ३ :

सन् १७५६ में नवाब बनने के वाद भी सिराजुद्दौला ने अपनी बचपने की हरकतें न छोड़ीं। उसके लुत्फुन्निसा से विवाह करने से सभी अप्रसन्न थे, क्योंकि लुत्फुन्निसा एक जरिया की लड़की थी। आम जनता में यह विवाह विवाद का विषय था, "क्या सिराजुद्दौला को किसी राजा या जागीरदार की कन्या पसन्द नहीं आयी ? क्या हम लुत्फा को अपनी बेगम स्वीकार कर लेंगे ?"

इसके अतिरिक्त लुत्फा एवं सिराजुद्दौला की युवा मित्र मण्डली का प्रशासन पर अत्यधिक प्रभाव बढ़ रहा था। दरबार में सामान्य कर्मचारी का मत था, 'वास्तव में शासन सिराज के मित्र मोहनलाल, मीरमर्दन, एवं बेगम लुत्फा ही चला रहे हैं। मीरजाफर, रायदुर्लभ एवं जगतसेठ तो देखने के लिए दरबार के रत्न हैं।'

उधर घसीटी बेगम भी घायल नागिन की भाँति फुँकार ले रही थी क्योंकि उसका राजमाता होने का स्वप्न तो दूर उसके प्रेमी एवं गोद लिये लड़के को भी मार दिया गया था। मीर-जाफर एवं रायदुर्लभ उससे पुरानी मुलाकात होने के कारण मिलते जुलते रहते थे, क्योंकि उसका पति ढाका का सूबेदार था एवं ढाका ही इसके पूर्व राजधानी थी तथा राज्य का अधि-कांश राजस्व ढाका से ही आता था। उसके पति नवाजिस खाँ

से भी सभी के ताल्लुकात बड़े मधुर एवं सहृदय थे। मीरजाफर की पदवी भी 'सिपहसालार आजम' वही थी जो उसके पति की मरने के पूर्व थी। उधर खबरें आ रही थीं कि सिराजुद्दौला के अन्याय एवं अत्याचार के कारण जनता में असन्तोष बढ़ रहा था। अतः उसने मोमिना बेगम के लड़के एवं पूणिया के नवाब को आक्रमण करने एवं सिराजुद्दौला को शासन से हटाने का षड्यन्त्र रचा। वह शौकत जंग को ही नवाब बनाना चाहती थी। अतः शौकत जंग ने मुर्शिदाबाद पर आक्रमण किया एवं जीत लिया। इसके बाद राजमहल में लड़ाई हुई एवं शौकत जंग राजमहल में मारा गया। यद्यपि यह कार्य घसीटी बेगम का था पर सभी जगह यह प्रकाशित हो गया कि यह षड्यन्त्र मीरजाफर ने किया था।

उस घटना के वाद सिराज मीरजाफर का अपमान करने लगा। एक बार उसने मीरजाफर, जगतसेठ एवं रायदुर्लभ को नृत्य देखने एवं मद्य सेवन के लिए बुलाया पर जब जरिया के नृत्य को देखकर मुग्ध होने लगे तो सिराजुद्दौला ने उन्हें लात मारकर बाहर निकाल दिया, क्योंकि नर्तिका सिराजुद्दौला की प्रेमिका थी जो वाद में उसके मित्र मोहनलाल की वहिन प्रकट हुई एवं दिल्ली से सिराज के लिए एक लाख अशर्फी में लायी गयी थी। इस घटना से तीनों लोग अत्यन्त क्षुब्ध हुए।

रायदुर्लभ एवं घसीटी बेगम में अपवित्र सम्बन्ध प्रगाढ़ हो रहे थे, क्योंकि घसीटी बेगम का सूनापन और कोई दूर करने वाला नहीं रह गया था। यही घसीटी बेगम रायदुर्लभ को सिराजुद्दौला के विरुद्ध षड्यन्त्र करने के लिए भी उकसाती थी। रायदुर्लभ का 'मोतीझील' में आना-जाना इतना बढ़ गया था कि यह मुर्शिदाबाद में आम जनता के मुख पर भी

पहुँच गया था। घसीटी बेगम के अपूर्व सौन्दर्य के कारण रायदुर्लभ अपने को उससे अलग नहीं कर सका। सिराजुद्दौला इस बात से अत्यन्त ही क्षुब्ध था। वह अपने मित्र मोहनलाल को रायदुर्लभ के स्थान पर प्रधान मन्त्री बनाने की सोच रहा था।

सिराजुद्दौला की अनियन्त्रित कामवासना सागर के ज्वार की जल की भाँति बह रही थी। ज्ञात हो रहा था कि मुर्शिदाबाद के नवाब के क्षेत्राधिकार में कोई भी सुन्दर कन्या नवाब के हरम में जाने से नहीं बचेगी। जगतसेठ फतेहचन्द के नाती मोहताब राय का विवाह एक ग्यारह वर्षीय अपूर्व सुन्दरी कन्या के साथ हुआ। नवाब को इसकी खबर लग गयी। नवाब ने उस सुन्दरता को देखने की इच्छा प्रकट की। जगतसेठ एवं उसके परिवार का कड़ा विरोध एवं सैकड़ों मिन्नतें भी युवा नवाब को उसके इस निर्णय से नहीं विचलित कर सके। फलस्वरूप एक दिन सायं दिल पर पत्थर रखकर नई नवेली बहू को पालकी में बैठा कर सिराजुद्दौला के हरम तक ले जाया गया एवं कुछ ही क्षण रुककर वह वापस आ गयी। सिराजुद्दौला ने अवश्य ही उसके साथ कुछ अन्याय किया। इससे जगत सेठ के परिवार में वह वितृष्णा की मूर्ति हो गयी एवं उसके पति ने उसका कभी संस्पर्श नही किया। पर उस बेचारी का उसमें क्या दोष था? पर उस घटना के बाद जगतसेठ का समस्त परिवार नवाब के विरुद्ध हो गया। यद्यपि प्रत्यक्ष रूप से वे कोई कदम नहीं उठा सकते थे पर परोक्ष रूप से वे इस बदले की आग में जलते रहे।

इस घटना के पश्चात् षड्यन्त्र का केन्द्र घसीटी बेगम का 'मोती महल' से बढ़कर जगतसेठ का मकान बन गया जहाँ सायं रायदुर्लभ, अमीचन्द, मीरजाफर एवं जगतसेठ मिलकर

बैठते थे । यह भी अफवाह उड़ी कि सिराजुद्दौला ने जाफरागंज महल भी उड़वाने का आदेश दे दिया है । पर नवाब के ये आदेश तीन रत्नों के विरुद्ध आसानी से पारित नहीं होते थे, क्योंकि दरबार के अधिकांश कर्मचारी लम्बे अरसे से उनके साथ कार्य करते हुए उनके स्वामिभक्त हो गये थे एवं युवा नवाब के अस्थिर निर्णयों से परेशान थे । अतः तीनों ने असुरक्षा की भावना से षड्यन्त्र का कार्य तेजी से प्रारम्भ किया ।

सिराज का मीरजाफर एवं दल पर अविश्वास बढ़ता जा रहा था । एक दिन रात्रि को एकाएक मीरजाफर को नींद से उठाकर सिराजुद्दौला के दरबार में बुलाया गया । आधी रात को सम्पूर्ण दरबार देखकर मीरजाफर स्तम्भित रह गया । सिराजुद्दौला ने मीरजाफर की पगड़ी उतारते हुए कहा, 'आज से तुम हमारे सिपहसालार नहीं होगे । तुम्हारे स्थान पर मीरमर्दन नवाबी सेना का सेनापति के हिसाब से कार्य-भार संभालेगा । मीरजाफर ने क्रोध में तम-तमाकर उत्तर दिया, ठीक है नवाब साहब ! पर यह मेरा अपमान क्यों ? मैंने सेना रखने का दिल्ली के बादशाह से फरमान प्राप्त किया है जहाँ से अभी तक आपका फरमान नहीं आया है । अतः मैं अवश्य ही आपका सेनापति नहीं रहूँगा पर अपनी व्यक्तिगत सेना रखूँगा ।'

सिराजुद्दौला ने कहा, "यह ठीक है पर तुमको मीरमर्दन को आदर देना होगा ।"

मीरजाफर ने कहा, "मैं एक सैयदी मुसलमान हूँ । मेरी जान भी चली जाये तो भी मैं एक हिन्दू के सामने नहीं झुकूँगा । मेरा एवं आपका एक ही पद है । हम दोनों दिल्ली सल्तनत के अधीन हैं ।" सिराजुद्दौला ने क्रोधपूर्वक आदेश दिया, "मीरजाफर

को गिरफ्तार करो एवं उसकी दाढ़ी काट दो।" सिराजुद्दौला के आदेश पर उसके लोगों ने मीरजाफर की दाढ़ी पर ऊपर ऊपर कैंची फेर दी एवं मीरजाफर का अपमान किया। मीर-जाफर ने यह अपने जीवन का सबसे बड़ा घोर अपमान मान-कर कहा, "नवाब, इसका प्रतिकार शीघ्र ही होगा।"

इस पर सिराजुद्दौला ने तलवार निकाल ली पर अन्य लोगों के मना करने पर स्थिति वहीं शांत हो गयी।

इस प्रकार सिराजुद्दौला के अन्याय की लहर चल रही थी। पुराने कर्मचारियों को एकदम से बदलने के कारण सभी कर्म-चारियों के बीच असुरक्षा की भावना आ गयी एवं वे सिराजु-द्दौला के विरुद्ध कार्यवाही में सहयोग की राह देखने लगे। शत्रुओं को एक एक करके परास्त करना उचित था। स्थायी संगठन के विरुद्ध एक साथ कोई भी नहीं लड़ सकता है।

इसी प्रकार एक दिन उसने रायदुर्लभ के स्थान पर मोहन-लाल को प्रधानमन्त्री नियुक्त किया। जहाँ प्रशासन में तीव्रगति से परिवर्तन आ रहे थे वहाँ सिराजुद्दौला की इन्द्रिय-लोलुपता भी कम नहीं हो रही थी। यद्यपि सिराजुद्दौला एक युवा बहा-दुर एवं देशभक्त नवाब था पर उसके सलाहकार एवं वह स्वयं अपरिपक्व थे।

एक दिन एक भीख माँगने वाला मुसलमान फकीर (पकड़-कर) दरबार में लाया गया। सिराजुद्दौला ने उससे पूछा, 'तुम किसको सर्वोच्च मानते हो।" उसने उत्तर दिया, "मैं अल्ला को सर्वोच्च समझता हूँ जिसके मैं एवं आप सभी बन्दे हैं।"

सिराजुद्दौला ने कहा, "पर मैं तो उस धरती पर अल्ला का भेजा हुआ प्रतिनिधि हूँ।"

फकीर ने कहा, "यह आपकी भूल है।" इस उत्तर से क्रोधित होकर सिराजुद्दौला ने फकीर की दाढ़ी काटने का आदेश दिया। उसके फलस्वरूप राज्य की मुसलमान जनता की धार्मिक भावना को ठेस पहुँची। उधर सिराज की युवा मण्डली कारिन्दों के अन्यायों को बन्द करने में अक्षम एवं अयोग्य थी। वे निरंकुश राजस्व वसूल करके शासन की सामान्य जनता को परेशान और उत्पीड़ित कर रहे थे।

एक दिन हीरा झील महल के पास एक 'मदन-गोपाल' अर्थात् कृष्ण भगवान का मन्दिर था। उसकी पूजा की घंटियों की आवाज से सिराज के हरम एवं महल की शांति भंग होती थी। अतः एक दिन सिराज ने मन्दिर में पूजा के लिए गाय एवं बकरे का मांस आदि भेजा। सिराज के लोगों ने कहा, "नवाब का हुकुम है कि मन्दिर की पूजा से उत्पन्न शोरगुल को तुरन्त ही बन्द किया जाये एवं कृष्ण भगवान को नवाब की ओर से यह प्रसाद भेंट किया जाये।"

मन्दिर के पुजारी ने नवाब की भेंट को प्रेमपूर्वक स्वीकार किया एवं प्रसाद लगाने के पश्चात् नवाब के कर्मचारियों को वापिस दे दिया। नवाब के कर्मचारी मांस के स्थान पर सुन्दर पुष्प देखकर आश्चर्यचकित हो गये एवं दौड़ते हुए नवाब के पास गये। तब नवाब ने मन्दिर को जागीर दी ताकि उसकी आमदनी से नियमित पूजा अर्चना हो सके एवं फिर कभी भी मन्दिर की पूजा में आपत्ति नहीं की।

एक दिन की घटना है कि नवाब सिराजुद्दौला बजरा (नाव) में बैठकर भागीरथी नदी में सैर कर रहे थे एवं मुर्शिदाबाद से ढाका जा रहे थे। रास्ते में उन्होंने एक अपूर्व सुन्दरी को बड़ानगर के पास अपने मकान की छत पर बाल निकालते हुए देखा।

२

सिराजुद्दौला उस पर मोहित हो गया तथा उसे प्राप्त करने की इच्छा प्रकट की। इसका आभास उसकी सास रानी भवानी को हुआ एवं वह उसे लेकर अज्ञात स्थान पर जाने लगी। जब सिराजुद्दौला को यह ज्ञात हुआ तो सिराजुद्दौला ने अपने आदमियों के साथ ताराबाई की नौका को घेर लिया। पर कहते हैं कि वहाँ के साधु-सन्तों के प्रभाव से सिराजुद्दौला को ताराबाई के शरीर में चेचक के चिन्ह दिखायी दिये। सिराजुद्दौला ने ताराबाई से कहा, "मैं तुमसे विवाह करके अपनी पटरानी बनाना चाहता हूँ पर ताराबाई ने कहा, "पर मैं आपसे प्रेम नहीं करती हूँ, एवं आपको स्पर्श करना भी मेरे लिए घोर पाप है, क्योंकि मैं एक हिन्दू विधवा हूँ।"

अतः सिराजुद्दौला को बुद्धि आ गयी एवं वह ताराबाई को वहीं छोड़कर उसी समय मुर्शिदावाद राजधानी वापिस चला आया एवं रानी भवानी ने अपनी तेरह वर्षीय विधवा लड़की को किसी आश्रम में छुपा दिया एवं प्रचार कर दिया कि उसने इस घटना से आतमदाह कर लिया।

उस घटना से शासन की हिन्दू जनता भी सिराजुद्दौला पर क्षुब्ध हो गयी, क्योंकि रानी भवानी हिन्दुओं की नेता थी तथा सभी हिन्दू उस पर अटूट श्रद्धा एवं विश्वास रखते थे।

उपर्युक्त घटना क्रम से स्पष्ट है कि तत्कालीन परिवेश में यह स्पष्ट करना मुश्किल है कि मीरजाफर एवं सिराजुद्दौला देश की परतन्त्रता के लिए किस सीमा तक दोषी थे, क्योंकि उस समय शासन व्यवस्था वैज्ञानिक पद्धति पर निर्भर नहीं थी। आजकल की भाँति वह प्रबन्ध सिद्धान्तों से नहीं परिचालित होती थी, बल्कि नवाब की मधुर एवं निरंकुश इच्छाओं से संचालित होती थी।

□

: ४ :

'मोतीझील' में चल रहे षडयंत्र का आभास सिराज को हो गया एवं नवाब बनने के बाद सिराज ने 'मोतीझील' पर आक्रमण कर दिया एवं अनैतिक कार्य तथा दुराचार करते हुए राय दुर्लभ को गिरफ्तार कर लिया और धन की लूट-पाट की। दुर्लभ राय का लड़का रामलाल घसीटी बेगम का धन, हीरे-जवाहरात एवं पैसा लेकर अंग्रेजों के पास पहुँच गया। जनता में हर्ष की लहर आयी, क्योंकि यह अनैतिक कार्य अर्थात् विधवा बेगम एवं दीवान दुर्लभ राय के बीच अवैध सम्बन्धों को कोई भी बर्दाश्त नहीं कर पा रहा था।

अंग्रेजों ने रामलाल को शरण दी एवं कुछ माल-पत्र भी रख लिया। सिराज अंग्रेजों के उस कार्य से नाराज हो गया एवं उसने विरोधस्वरूप कलकत्ते में ईस्ट इण्डिया कम्पनी को एक पत्र लिखा, "तुम लोग तुरन्त रामलाल को गिरफ्तार करके भेज दो अन्यथा यह कार्य नवाब के विरोध में माना जायेगा।" उधर उमीचन्द ने अंग्रेजों से मिलकर रामलाल की सुरक्षा की व्यवस्था की एवं अंग्रेजों ने सिराजुद्दौला के धमकी भरे पत्र का कोई भी उत्तर नहीं दिया।

सिराजुद्दौला ने कलकत्ते में अंग्रेजों पर आक्रमण कर दिया। नवाब की सेना देखकर अंग्रेज हक्के-बक्के रह गये एवं उन्होंने बिना लड़े हुए अस्त्र-शस्त्र गिरा दिये। नवाब के हुकुम पर

अंग्रेजों की गिरफ्तारियाँ हुईं एवं नवाब के सैनिकों ने कलकत्ते में खूब लूट-पाट की एवं लूट-पाट का माल अपनी जेबों में भरा। एक अट्ठारह फीट वर्ग के कमरे में लगभग १४६ अंग्रेजों को बन्दी बना दिया गया, क्योंकि सूबेदार का आदेश था। एक सैनिक सूवेदार से जिज्ञासावाद करने भी गया कि इस छोटे घर में सभी बन्दी नहीं रखे जा सकते थे पर सूवेदार के पहरे-दारों ने उसे सूवेदार से बात नहीं करने दिया, क्योंकि उस समय सूबेदार सो रहे थे। अतः १२३ अंग्रेज मारे गये क्योंकि उसमें सांस लेने की जगह नहीं थी। उसे काले छिद्र की दुःखभरी कहानी (ब्लैक होल ट्रेजेडी) के नाम से जाना जाता है।

उस निरंकुश एवं अंग्रेजों के हत्याकांड से अंग्रेजों में विद्रोह हो गया एवं सभी नवाब से प्रतिकार का अवसर देखने लगे।

हुगली में उमीचन्द एवं नन्दकुमार के सहयोग से अंग्रेजों ने बीस तोपी जहाजों से नवाब की सेना पर आक्रमण किया एवं हुगली का गवर्नर उस आक्रमण को नहीं रोक पाया। नवाब की सेना ने भी उसमें कुछ लूट-पाट का मामला नहीं दखा। अतः सेना ने डटकर अंग्रेजों का सामना नहीं किया अपितु वेतन न मिलने के कारण उन्होंने विद्रोह कर दिया एवं जब तक उन्हें काफी धन नहीं दिया गया, तीन दिन तक वे आन्दोलन करने रहे। फिर उन्हें सब बकाया देने का आश्वासन दिया गया एवं मीरजाफर ने इस सन्धि में साक्षी अथवा जमानतकार की भूमिका अदा की। तब जाकर सेना शान्त हुई।

इस युद्ध से अंग्रेजों, नवाब के प्रतिनिधि एवं गवर्नर में 'अलीनगर सन्धि' हुई जिसमें तय हुआ कि वे फ्रांसीसियों को अपना दुश्मन मानेंगे एवं एक दूसरे के हित में बाधा नहीं देंगे। यह नवाव के लिए असम्मानजनक सन्धि थी।

कलकत्ते की लूट-पाट के माल में से दरबार में एक दिन नवाब ने जगतसेठ से एक बड़ी भेंट माँगी पर जगतसेठ ने आनाकानी की, इस पर नवाब सिराज ने जगतसेठ को भरे दरबार में एक थप्पड़ लगाया। इससे जगतसेठ नवाब का जानी दुश्मन बन गया।

उधर मीरजाफर भी भय के कारण अपने महल से नहीं निकलता था, क्योंकि नवाब ने उसके महल को उड़ाने की धमकी दी थी।

एक दिन एक पालकी में औरतों का वेश बनाकर कैप्टन वाट एवं रायदुर्लभ जगतसेठ के यहाँ जा रहे थे। दूसरी ओर कासिम बाजार में अंग्रेजों के नीलकुटी के मैनेजर वाट की मेम साहब मोतीझील में षड्यन्त्र कर रही थी। सिराज ने आक्रमण करके सभी को पकड़ लिया पर उसकी माँ आमिना बेगम के रहने पर उसे श्रीमती वाट एवं उसकी नौकरानी एवं लड़की को क्षमा करना पड़ा एवं वाट को भी आखिरी बार चेतावनी देकर सिराज ने क्षमा कर दिया। पर सिराज कासिम बाजार अंग्रेजों के कार्य-कलापों की पूरी खबर रखता था एवं उसने कासिम बाजार पर आक्रमण करके अंग्रेजों के बढ़ते हुए निर्माण कार्य को बन्द कर दिया। सिराज ने शराब भी छोड़ दी क्योंकि उसने अलीवर्दी के मृत्यु शैय्या पर वायदा किया था पर वह किसी प्रकार अंग्रेजों को देश से निकालने में सफल नहीं हो पा रहा था।

इधर सिराज ने गुप्त रूप से फ्रांसिसियों से भी समझौता कर रखा था ताकि वे सभी मिलकर अंग्रेजों को भारत से निकाल दें। इन सभी बातों की खबर इङ्गलैण्ड तक पहुँच गयी एवं क्लाइव योग्य एवं वीर योद्धा भारत आ चुका था। उसे

नवाब से निबटने का दायित्व सौंपा गया क्योंकि वह दक्षिणी भारत में अंग्रेजों की सफलता का बिगुल बजा चुका था।

रामलाल को भी गिरफ्तार करके सिराज के सामने लाया गया पर सिराजुद्दौला ने रामलाल को दण्ड देने की जगह पुरस्कार दिया। सिराज के इस निर्णय से आम जनता म अत्यन्त खराब प्रतिकूल प्रतिक्रिया हुई क्योंकि रामलाल के पीछे नवाब ने इतना कुछ किया फिर उसी व्यक्ति को पुरस्कार दिया। जनता का नवाब के निर्णयों पर से विश्वास उठ गया एवं वे भाग्य की ओर ही देखने लगे।

'जगतसेठ' का काफी पैसा कासिम बाजार की स्थित नील के कारखाने में लगा था। अतः जगतसेठ नहीं चाहता था कि अंग्रेज कासिम बाजार से चले जायें क्योंकि उससे उसका सभी पैसा गड्ढे में चला जाता। प्रत्येक दिन सिराजुद्दौला का कोई न कोई कार्य तीनों रत्नों के विरुद्ध जाता था। अतः उन्होंने निश्चय किया कि इस नवाब को सिंहासन से हटाने के लिए सेनापति बहादुर क्लाइव का सहयोग लिया जाये। दल ने मुर्शिदाबाद में एक गुप्त सभा भी बुलायी जिसमें सिराज से असन्तुष्ट एवं मुसलमान नवाबों को बुलाया गया। जब सिराज को अंग्रेजों की सहायता से हटाने का प्रस्ताव सामने आया तो रानी भवानी ने कहा, "सिराज जितना ही खराब हो पर हमें विदेशी शक्ति को अपने घरेलू मामलों में दखल का काम नहीं सौंपना चाहिए। पर वहुमत राजी न हुआ। उन्होंने यारलतीफ खाँ को नवाब बनाने की योजना बनायी पर लतीफ खाँ भी जनता को स्वीकार नहीं था। अतः मीरजाफर को उन्हें मजबूरी में चुनना पड़ा। उमीचन्द कलकत्ते से क्लाइव एवं इन तीनों के बीच मध्यस्थ का काम करता था। जगतसेठ ने क्लाइव को इस कार्य के लिए ३ लाख रुपये देने का निश्चय किया।

मीरजाफर

अतः सिराज को जैसे-तैसे ही हटाने का फैसला हुआ।

क्लाइव भी इस प्रकार की योजना की खोज में था। अतः उसने एक पत्र में नवाब को लिखा, "आपने कलकत्ते में १२३ अंग्रेजों को मारकर हमारी कौम का अपमान किया है। शायद आप नहीं जानते कि हम उस ब्रिटिश रानी के लोग हैं जिसे विश्व में कोई नहीं हरा सकता। दूसरे, आप सन्धि के विरुद्ध निरन्तर फ्रांसिसियों से साँठ-गाँठ करके हमें भारत से निकालना चाहते हैं एवं हमारे व्यापारिक प्रतिष्ठानों को क्षति पहुँचाना चाहते हैं। आपने हमारे कासिम बाजार में प्रतिनिधि रोजर ड्रैक को दण्ड दिया है जिसे केवल कम्पनी ही दे सकती है।"

क्लाइव के इस पत्र से आक्रमण की दुर्गन्ध आ रही थी। सिराजुद्दौला उसे युद्ध का निमन्त्रण समझ गया पर अभी तक उसकी नवाबी सेना पूर्ण रूप से अस्त-व्यस्त थी, क्योंकि सेना के ऊपर व्यय के लिए रुपया-पैसा नहीं उपलब्ध हो रहा था। दूसरे, सेना को लूट-पाट करने की आदत पड़ चुकी थी। तीसरे, सेना व्यक्तिगत जागीरदार अथवा तीनों रत्नों के अधीन थी एवं उस सेना की स्वामिभक्ति जागीरदार अथवा सम्बन्धित पदाधिकारी के प्रति ही थी। नाममात्र के लिए ही वह नवाबी सेना कहलाती थी। अतः सिराज ने इस कार्य में मीरजाफर की सहायता माँगी पर मीरजाफर प्रथम राजी नहीं हुआ। पर नवाब के काफी अनुनय-विनय पर मीरजाफर निम्न शर्तों पर अंग्रेजों के विरुद्ध युद्ध करने लिए तैयार हुआ। प्रथम, बन्दी जगतसेठ को छोड़ना पड़ेगा। दूसरे, मैं आपके कर्मचारी की हैसियत से युद्ध नहीं करूँगा और मेरे एवं परिवार के जीवन की सुरक्षा का आपको वायदा देना पड़ेगा।" सिराजुद्दौला ने शर्तें स्वीकार कर लीं।

दूसरी ओर मीरजाफर एवं अंग्रेजों में सफेद कागज पर सन्धि हुई जिसमें अंग्रेजों को तीन लाख रुपये देने की बात थी एवं अंग्रेजों को सभी प्रकार की सहायता एवं रेजिडेन्ट रखने की भी बात थी। मीरजाफर ने रायदुर्लभ एवं जगतसेठ से सलाह करके सन्धि पर हस्ताक्षर कर दिये।

षड्यन्त्र एवं संधि के अनुसार क्लाइव अपनी सबसे अधिक फौंज लेकर भागीरथी नदी के रास्ते से आया एवं प्लासी के पास एक लाख आम के पेड़ों के बाग के पास उसने पड़ाव डाला। क्लाइव के पास घुड़सवार, जहाज एवं तोपें थीं। दूसरी ओर से नवाब सिराजुद्दौला भी प्लासी पहुँचा एवं भागीरथी नदी के दूसरी ओर उसने सेना का पड़ाव डाला। क्लाइव के पास मात्र ३½ हजार सैनिक थे जबकि नवाब के पास पचपन हजार सैन्य बल था जिसमें दस हजार सैनिक मीरजाफर के मातहत थे। इसके अतिरिक्त रायदुर्लभ, मीरमर्दन एवं मोहनलाल एवं फ्रांसीसी सिपाही भी थे। २⅓ कि० मी० की दूरी पर नवाब का कैम्प था। मीरजाफर का पड़ाव बीच में था। उसके एक ओर फ्रांसीसी एवं दूसरो ओर मीरमर्दन तोप की बागडोर संभाले थे। नवाब की प्रबल सेना देखकर क्लाइव निराश हो गया एवं दिन के युद्ध करने के बाद रात में हुगली भाग जाने की सोचने लगा जहाँ उसके अन्य जहाज थे। ११-३० बजे दिन में घोर वृष्टि हुई। अंग्रेजों का गोला-बारूद त्रिपाल से ढँका था पर नवाब के सभी गोले-बारूद भींग गये। अंग्रेजों की तोपें चलायमान थीं पर नवाब की तोपें स्थिर थीं। डेढ़ बजे जंग प्रारम्भ हुई। मीरमर्दन की तोपवृष्टि से क्लाइव के घोड़े की पंक्ति नष्ट हो गयी पर वह सभी सैनिकों को सामने रखकर ऊपरी ऊँचाई से तोप वृष्टि करता रहा जिससे नवाब सेना को ज्ञात हुआ कि उसके पास अधिक सेना है। क्लाइव निराश

होकर समझौता करना चाहता था पर फ्रांससी यह नहीं चाहते थे। अतः प्रथम तोप फ्रांसीसियों ने ही दागी एवं युद्ध का आरंभ हुआ। मीरजाफर भी दोनों में समझौता करा देना चाहता था। कुछ देर में मीरमर्दन की तोप फट गयी एवं सेना में हलचल मच गयी कि सेनापति के मरने पर गोरे सैनिकों ने कब्जा कर लिया है। मीरजाफर एवं रायदुर्लभ अकर्मण्य रहे। पर फ्रांसीसियों एवं अन्य लोग लड़ाई जारी रखते रहे। पर नवाब को यह सलाह दी गयी यदि अभी लड़ाई बन्द नहीं हुई तो हम हार जायेंगे। यह समाचार क्लाइव ने मीरजाफर को युद्ध-क्षेत्र में भेजा। यह कार्य निराश क्लाइव एवं मीरजाफर के उकसाने पर किया गया था।

नवाब सिराजुद्दौला मीरजाफर के पास आये एवं कहा, "अब सेना की बागडोर आप सँभालिये।"

मीरजाफर ने मना किया पर सिराजुद्दौला ने अपनी पगड़ी मीरजाफर के पैरों पर रखकर कहा, "आपको अलीवर्दी की एवं कुरान की सौगन्ध है। आपको यह युद्ध हमें जिताना ही है।"

मीरजाफर ने धृष्टता एवं चालाकीपूर्वक कहा, "तब आप लड़ाई बन्द करने का तुरन्त आदेश दें। कल मैं निबट लूँगा।"

मोहनलाल एवं फ्रांसीसी सेनापति ने नवाब को समझाया, "अंग्रेजों के पास और सैनिक नहीं हैं। हम लड़ाई जीत चुके हैं, अतः लड़ाई जारी रखने का हुकुम दीजिए। हमारी सेना वेतन न पाने से अत्यधिक नाराज है। लड़ाई रोकने से भगदड़ मच जायेगी।" सिराज ने मीरमर्दन की मृत्यु से घबड़ा कर लड़ाई बन्द करने का निर्देश दिया एवं सेना की बागडोर मीरजाफर के हाथों सौंपकर वह अपने टेण्ट में सोने चला गया। इसी बीच मीरजाफर ने एक दूत से कहलाकर क्लाइव से

आक्रमण करने के लिए कहा। नवाब की सेना अर्द्ध सुप्तावस्था में थी एवं क्लाइव के साथ मीरजाफर के सैनिक भी मिल गये एव नवाब के समस्त सैनिक सामना न कर भाग निकले क्योंकि नवाब के भागने की अफवाह पहले ही उड़ चुकी थी। सिराजुद्दौला का हाथी भी इस अनियन्त्रित अवस्था एवं कीचड़ की जमीन देखकर भाग निकला। सिराजुद्दौला रात्रि को चार बजे मुर्शिदाबाद महल में पहुँचा।

क्लाइव ने मीरजाफर को आकर सैल्यूट किया एवं कहा, "यह जीत मेरी नहीं अपितु आपकी है।"

क्लाइव अपने २५० गोरे सैनिकों, मीरजाफर एवं रायदुर्लभ के साथ महल पहुँचा। उसे देखने के लिए हजारों की संख्या में भीड़ थी। क्लाइव ने कहा, "यदि उस समय सभी हम पर एक-एक पत्थर भी फेंकते तो अंग्रेजों का अस्तित्व नहीं रहता।"

सिराजुद्दौला ने महल में आकर अपने ससुर एवं सभी मित्रों, जमींदारों एवं राजाओं को बुलाया ताकि वह फिर से एक बार अंग्रेजों का मुकाबला कर सके पर कोई सहमत नहीं हुआ। महल में सभी इस बात से क्षुब्ध थे कि नवाब क्यों भागकर रणक्षेत्र से आया। नवाब या तो जीतकर आता या बन्दी होता अथवा रणक्षेत्र में ही मारा जाता। सिराजुद्दौला अपनी बेगम लुफता एवं बच्चे एवं नौकर के साथ भाग गया तथा रीतिपूर्वक क्लाइव ने मीरजाफर को मुर्शिदाबाद की गद्दी पर बिठाया।

□

: ५ :

प्लासी में विजय के पश्चात् अंग्रेजों की सेना मुर्शिदाबाद महल में आनन्द करने लगी। मीरजाफर एवं दल ने उनके लिए शराब एवं उत्तम खाने की व्यवस्था की। अंग्रेजी सेना ने इतनी शराब पी ली कि अनेक अंग्रेज सैनिक बीमारी से मारे गये। क्लाइव के पास केवल दो सौ सैनिक बचे।

अंग्रेजों की इतनी कम सेना को देखकर मीरन ने सभी के सामने प्रस्ताव किया, "क्यों न हम क्लाइव की बची-खुची सेना को मार दें ?" जगतसेठ राजी न हुआ क्योंकि हत्या के बाद के परिणामों का कौन सामना करेगा।"

नवाब की चार हजार सेना मारी गयी थी।

अतः अंग्रेजों एवं क्लाइव की शक्ति से सभी परिचित हो चुके थे।

प्लासी युद्ध की विजय के पश्चात् मीरजाफर ने कई बेगमों को क्लाइव एवं साहबों को उपहार में दिया। सिराज के पलायन के पश्चात् जो बेगम, बांदी बच गयी थीं, मीरजाफर ने सभी को अंग्रेज शिविर में भेज दिया। सम्पूर्ण नवाबी हरम में कोहराम मच गया। बेगमें माल लेकर भागीं पर पकड़ कर या तो मार दी गयीं या उनका माल छीन लिया गया। मीरन ने अलीवर्दी की बेगम एवं उनकी दो लड़कियाँ घसीटी एवं अमीना को कैद करके ढाका भेज दिया एवं समस्त माल लूट लिया।

गोरी सेवा में काफी रुपया बाँटा गया एवं क्लाइव ने साढ़े-दस लाख रुपये की माँग की एवं रुपया न मिलने पर मीरजाफर एवं जगतसेठ को धमकी दी। जगतसेठ को अपनी थैली निकालनी पड़ी। क्लाइव को साढ़े दस लाख रुपये दिये एवं उसके सुझाव पर मीरजाफर को षड्यन्त्र के पुरस्कार के स्वरूप इक्कीस लाख रुयये दिये गये। मराठा लोगों को भी चौथ देने का निर्णय हुआ क्योंकि मराठों से भी षड्यंत्र की बात हुयी थी, पर उन्होंने वर्षाकाल के पश्चात् षड्यंत्रकारियों को सहा-यता देने का वचन दिया था। लेकिन वे प्रतीक्षा न कर सके एवं २३ जून, १७५७ में ही भारत की स्वतन्त्रता का नीलाम हो गया। जगतसेठ भी चिन्ता नहीं कर रहा था क्योंकि उसने नवाब से ही सारा रुपया कमाया था। कहते हैं कि एक बार मराठों ने जगतसेठ को लूट लिया एवं बीस लाख रुपये ले गये। पर जगतसेठ के शरीर का एक बाल भी नहीं खड़ा हुआ। यह था जगतसेठ के धन का आलम। वास्तव में वह उस समय का कुबेर था।

इसी बीच सिराजुद्दौला के भी पकड़ने की खबर आयी एवं सिराजुद्दौला के भविष्य के विषय में मीरजाफर ने एक बैठक बुलाई। मीरजाफर ने कहा, 'हम उसे नजरबन्द करके छोड़ दें।'

क्लाइव एवं वाट एवं वाल्स उसके विरोध में थे और सिराज कड़ा दण्ड देना चाहते थे पर मीरन एवं उसके मित्र इस प्रस्ताव के कड़े विरोधी थे। मीरन ने कहा, "यदि हमने अर्द्धमरे साँप को जिन्दा छोड़ दिया तो वह हमारा काल होगा। फिर सिराज बहुत बहादुर है एवं लोगों को उस पर अडिग विश्वास है। जगतसेठ एवं रायदुर्लभ ने भी मीरजाफर का दबे

स्वर से सर्थन किया, 'सिराज को अपने किये हुए की सजा मिल चुकी है। हमने अलीवर्दी खाँ को बचन दिया है। हम उसे ढाका में कैद करके रख दें।"

पर मीरन एवं उसके दल ने उसका कड़ा विरोध किया। मीरन अपने किसी विरोधी को जीवित नहीं देखना चाहता था। अतः बड़ों एवं वयस्कों की मण्डली चुप रही। मीरन सिराजुद्दौला को जाफरागंज महल में ले गया एवं वहीं उसका कत्ल कर दिया। बाद में सिराज की लाश को एक हाथी पर रखकर सम्पूर्ण शहर में घुमाया गया एवं खोश बाग में दफना दिया गया। मुर्शिदाबाद की जनता में मीरन के अन्याय का खौफ छा गया।

क्लाइव भी मीरन के बढ़ते प्रभाव, शक्ति एवं निरंकुशता से भयभीत हुआ। जनता ने मीरजाफर के महल जाफरागंज का नाम "नमक हराम देवड़ी" रखा। जनता में यह विवाद रहा, "इस हार का दोषी कौन है ?"

कुछ लोग सिराजुद्दौला को दोषी मान रहे थे तो कुछ लोग मीरजाफर एवं उनके दल को। पर सभी एकमत थे, "मीरजाफर एक सीधा व्यक्ति है। वह तो शतरंज का मोहरा बनाया जा रहा है। पूर्व में जगतसेठ ने अपने परिवार के अपमान का बदला लेने के लिए उसे मोहरा बनाया। अब मीरन मीरजाफर की आड़ में सभी प्रकार का अन्याय करना चाहता है।"

बुद्धिजीवी वर्ग का मत था, यह हार एक व्यक्ति विशेष एवं उसके दुर्गुणों की नहीं है बल्कि उस अपसंस्कृति की है जो नवाबों के यहाँ पीढ़ी दर पीढ़ी से पोषित होती चली आ रही है। नवाबों को बचपन से अस्त्र-शस्त्र विद्या के अतिरिक्त केवल

बांदियों एवं जरियों से खेलना सिखाया जाता है। प्रशासन के कर्मचारियों, अधिकारियों अथवा जनता के साथ कैसा सलूक करना चाहिए, उसकी लेशमात्र भी शिक्षा नहीं दी जाती है। नवाबों को बचपन से ही प्रशासन चलाने की शिक्षा, विशेष व्यक्तियों से व्यवहारकरने की शिक्षा देनी चाहिए, क्योंकि अन्य कार्य तो व्यक्ति विशेष ही देख लेंगे। कम से कम सिराज को अपनी उम्र से बड़े व्यक्तियों जैसे मीरजाफर, जगतसेठ एवं राय दुर्लभ से सौम्यपूर्ण आचरण करना चाहिए एवं उनसे एक एक करके निबटना चाहिए था। उन्हें दण्ड देने के पूर्व राज्य के अन्य बड़े एवं वयस्क लोगों की भी सिराज की सलाह लेनी चाहिए थी।"

उधरअंग्रेज सेनापति एवं अधिकारी धन बटोरने में लगे थे। कासिम बाजार में नीलकुटी कारखाने के अंग्रेज व्यवस्थापकों ने भी जगतसेठ से कारखाने की क्षति पूरी करा ली।

मीरजाफर राजकोष की स्थिति न समझ कर ही रुपये देने का वायदा कर देते थे। अतः जब प्लासी युद्ध के बाद उनके समक्ष आय-व्यय का हिसाब रखा गया तो मीरजाफर ने माथे पर हाथ रखकर कहा, 'मैं तो यह वित्तीय जंजाल नहीं समझता था। मुझसे तो बड़ी भूल हो गयी है। अब हम कैसे सभी कर्मचारियों का वेतन देंगे ?"

मीरजाफर वस्तुतः राजकोष की स्थिति देखकर पागल हो गये। दीवान एवं जगतसेठ ने चाटुकारिता से कहा, "नवाब बहा-

दुर, आपका व्यक्तिगत खर्च तो कुछ भी नहीं है न ही आप-का सिराजुद्दौला की तरह बड़ा हरम है। अतः आप हमें छूट दें, हम सभी व्यवस्था कर लेंगे।"

मीरजाफर ने कहा, "यह तो ठीक है पर क्लाइव की कोई भी माँग हम अस्वीकार नहीं कर सकते। इस बात का सर्वप्रथम ध्यान रखना।"

सभी नवाब से राजी होकर राज-काज में लग गये।

□

: ६ :

मीरजाफर बंगाल, बिहार एवं उड़ीसा का नवाब नाजिम हो गया पर दिल्ली से अभी भी सनद नहीं आयी थी एवं दिल्ली में मराठों ने उत्पात मचा रखा था। दिल्ली पर १७५७ में मराठों का कब्जा भी हो गया था। अतः क्लाइव एवं मीरजाफर ने सलाह मशवरा किया, " हम इस समय दिल्ली सल्तनत से युद्ध करने की स्थिति में नहीं है। अतः मराठों को हमें नियमित चौथ देना चाहिए।"

इसी निर्णय के अनुसार दीवान रायदुर्लभ एवं जगतसेठ को सुनिश्चित आदेश दिये गये ताकि नवजात नवाबी शासन पर आक्रमण हो सके।

जगतसेठ से मीरजाफर ने कहा, "महताबचंद जी, जिस प्रकार से भी हो आपको तुरन्त ही दिल्ली से मेरी नवाबियत का फरमान या बादशाही हुकुमनामा लाना चाहिए। जितनी भी घूस देनी पड़े, आप दीजिए।"

जगतसेठ ने हाथ जोड़कर कहा, "नवाब बहादुर, जब मैं सिराज के लिए एक लाख रुपये देकर फैजी या फैयजान नर्तकी को ला सकता हूँ तो इस राजकाज के लिए खर्च करने में मुझे आपत्ति नहीं है। परन्तु, आप जानते हैं कि राजकोष की स्थिति बड़ी नाजुक है, अतः राजस्व वसूल करने में आपको पूरा सहयोग देना पड़ेगा। यदि आवश्यकता होगी तो नवाबी सेना के जोर से राजस्व वसूल करना होगा।"

मीरजाफर ने कहा, "वह आप जैसा चाहें वैसा होगा। मुझे आप लोगों पर विश्वास है। पर मुझे यह काम अवश्य करने दीजिए।"

जगतसेठ एवं रायदुर्लभ के छूट देने से भ्रष्टाचार सम्पूर्ण प्रशासन तन्त्र में प्रवेश कर गया। छोटे-छोटे जागीरदार एवं बादशाह राजस्व-विषय से अभिज्ञ नहीं थे एवं राजस्व एवं राज-कोष के नाम से घबराते थे। अतः जगतसेठ एवं रायदुर्लभ के कर्मचारियों एवं कारिन्दों ने प्रजा पर कहर ढा दिया। वे जहाँ शासन के लिए राजस्व वसूल करते थे वहीं अपनी जेबें एवं घर भरने में भी नहीं चूक रहे थे। जो जैसे पा रहा था, रुपये कमाता था। जगतसेठ एवं रायदुर्लभ अपने निर्दिष्ट राजस्व के अंश से खुश थे पर जनता के कष्टों को देखनेवाला कोई नहीं था। नवाब भी मृदु स्वभाव के थे पर उनसे शिकायत करने पर कुछ भी फल नहीं हो रहा था। जगतसेठ की तिजोरियाँ भर रही थीं एवं प्लासी युद्ध के पूर्व एवं उसके बाद खर्च किये गये धन को एकत्रित करने के प्रयास में जगतसेठ लगे थे। साधनों का तो नृशंसतापूर्वक दमन कर दिया गया। जनता की आशाओं पर तुषाराघात हो गया। सामान्य जनता कहने लगी, "हम सिराज को चरित्र के लिए कितना भी दोष दें पर उसके समय शासन का इतना अन्याय नहीं था। जगतसेठ एवं रायदुर्लभ जैसे अन्यायकारी लोगों का वही अपमान होना चाहिए था जो सिराज ने किया।"

अंग्रेजों ने भी बहती गंगा में हाथ धोया एवं उन्होंने भी स्थानों स्थानों पर नील के कारखाने खोल लिए एवं वे बिना राजस्व दिये व्यवसाय करने लगे। नियम-विहीन, भ्रष्टाचारी तन्त्र में अनुशासनहीनता ऊपर से नीचे तक इस प्रकार अंग-अंग में प्रवेश कर गई कि कोई किसी की बात नहीं सुनता था।

३

क्लाइव भी समय-समय पर मीरजाफर को विभिन्न नौकरियों के लिए अनुरोध भेजने लगे एवं मीरजाफर को क्लाइव की बातें माननी पड़ी। क्लाइव का प्रशासन में प्रभाव एवं हस्तक्षेप इतना बढ़ गया कि नवाब मीरजाफर बिना क्लाइव अथवा उनके दरबार में प्रतिनिधि की सम्मति के एक व्यक्ति को भी नौकरी नहीं दे पा रहे थे। लोग कह रहे थे, "आदेश तो क्लाइव का है पर कलम मीरजाफर की है।"

क्लाइव ने मीरजाफर पर दबाव डालकर लाखों रुपयों का व्यक्तिगत लाभ भी किया।

इसी बीच मीरजाफर की दिल्ली दरबार से सनद भी आ गयी। अब मीरजाफर के पूरे नाम मीरमुहम्मद जाफर अली खाँ का नवाबी नाम हुआ सुजाउल मुलुक हसमउद्दोला नवाब मीर मुहम्मद जाफर अली खाँ बहादुर महावत जंग नवाब नजीम ऑफ बंगाल।

क्लाइव के छह हजारी मनसबदारों एवं उमरावों ने मीरजाफर को सलामी दी।

मीरजाफर ने क्लाइव के सुझाव पर एवं राजकोष की स्थिति न जाने वर्द्धमान एवं नदिया जिलों का राजस्व ईस्ट इंडिया कंपनी को देने की प्रतिश्रुति दे दी जिसकी वार्षिक आय चालीस लाख रुपया थी।

इस प्रकार अत्यन्त लाभ लेकर क्लाइव ने मीरजाफर को लिखा, "जब मैं आप नवाब बहादुर को लिखता हूँ, वह इसी

प्रकार है जैसे मैं अपने पिता को लिख रहा हूँ। मुझमें आपके प्रति वही सम्मान एवं मित्रता है जो कि एक लड़के को पिता के प्रति होता है एवं जब मैं किसी काम के लिए आपको लिखता हूँ, वह आपकी भलाई के लिए है।"

मीरजाफर एवं क्लाइव के मध्य एक दूसरे के प्रति इतना अधिक व्यक्तिगत प्रेम एवं परस्पर पसन्द हो गयी कि उससे मीरजाफर यह नहीं समझ पाया कि वह बंगाल, बिहार, उड़ीसा ही नहीं क्लाइव के माध्यम से अंग्रजों के पास गिरवी रख रहा है बल्कि क्लाइव शनैः शनैः सारे हिन्दुस्तान को भी हड़प लेगा। वास्तव में प्रशासन में व्यक्तिगत सम्बन्ध एवं भयंकर वस्तुस्थिति है जिससे सभी को सावधान रहना चाहिए।

क्लाइव ने एक दिन घमण्ड में आकर कहा भी, "एक नवाब को हटाकर दूसरे नवाब को नियुक्त करने का दिल्ली ने उन्हें अधिकार दे दिया।" वास्तव में क्लाइव ही बंगाल का शासन-कर्ता था यद्यपि वह नवाब नहीं था।

क्लाइव के अभिवादन करने के लिए बंगाल के राजाओं में होड़ लग गयी। बीरभूम के राजा आसा इज्जमान सिराजुद्दौला के कड़े विरोधी थे अतः वे क्लाइव की सहायता से अपना राज्य वापिस लेने की कामना करने लगे। वर्द्धमान के राजा स्वरूप चांद ने भी क्लाइव की प्रशंसा की।

यह अभिवादन पत्र पाकर क्लाइव का माथा गरम हो गया। मीरजाफर ने भी क्लाइव से कहा, 'प्लासी की विजय मेरी नहीं, आपकी है।'

मीरजाफर ने कर्नल क्लाइव का बादशाही नाम एक दिन दरबार की बैठक में सम्मान प्रकट करते हुए दिया।

कर्नल क्लाइव जबरदस्त उल मुलुक नासूरेद्दौला सबत जंग बहादुर।

इस प्रकार के अभिवादन-पत्र एवं शीर्षक प्राप्त करके क्लाइव अपने को बंगाल का सर्व शक्तिमान् कर्ता समझकर घमण्ड करने लगा एवं बुद्धिजीवी वर्ग अप्रत्यक्ष रूप से मीरजाफर को क्लाइव का गधा कहने लगे। वर्तमान इतिहासकारों का भी यही अभिमत है।

□

: ७ :

मीरजाफर ने क्लाइव को अपनी आँखों की रोशनी कहा। अतः अमीचंद आदि सभी की राय थी कि मीरजाफर एक अशिक्षित पर योग्य एवं बहादुर सिपाही है पर वह सरकार चलाने योग्य नहीं है। अतः मीरजाफर गद्दी पर बैठा, सभी पुराने राजघराने के सदस्य उसे संदेह की दृष्टि से देखने लगे। मीरन के आदेशों पर सिराजुद्दौला की हत्या हुई अतः राजबल्लभ ने सिराजुद्दौला के छोटे भाई मिर्जा महरी को समर्थन दिया पर मीरन ने उसे दो तख्तों के बीच में नवम्बर में मरवा दिया। मीरन ने कहा, 'साँप को जीवित रखना खतरनाक है।"

इसका सभी ने विरोध किया। मीरजाफर ने अपना शीर्षक "महावतजंग" रखा एवं मीरन को "शाहमत जंग" की पदवी दी।

मीरन ने क्लाइव का भी सिर काटना चाहा क्योंकि मीरन ने कहा "सिराजुद्दौला के बाद हमारे रास्ते में सबसे बड़े दुश्मन अंग्रेज हैं। अतः हम उनके एकमात्र बहादुर सेनापति को रास्ते से हटा सके, तो हिन्दुस्तान के तख्त पर हमारा एकछत्र राज्य होगा।"

पर उसके इस षड्यन्त्र में कोई भी सम्मिलित नहीं हुआ, क्योंकि सभी अंग्रेजों की कूटनीतिज्ञता एवं रणकुशलता का परिचय प्लासी के युद्ध में दृष्टिगोचर कर चुके थे। क्लाइव के

कानों में भी इस असफल प्रयत्न की भनक पड़ी एवं वह साव-धान हो गया एवं उसने शराब एवं नवाबी महफिलों की बेहोशी में अपना अधिक समय नष्ट नहीं किया एवं वह "हीराझील एवं मंसूरगंज प्रासाद के बाहर आ गया पर मीरन से बदला लेने की अंग्रेजों ने कसम खायी।

मीरन को शिकार का बहुत शौक था एवं वह एक व्यक्तित्व-शाली व्यक्ति था। उसकी ऊँचाई ६ फीट एवं शरीर चंचल एवं कसरती था। अंग्रेज उससे भय करते थे। उसे कबूतर पालने का शौक़ था एवं आज भी उसके दो प्रिय कबूतरों की कब्र उसके परिवार की कब्रों के पास जाफरागंज कब्रिस्तान में है। वह इन कबूतरों के माध्यम से अपने गुप्त पत्र एवं संदेश भिजवाता था एवं अन्य शासकीय कार्यों के लिए उपयोग करता था एवं अपने विरुद्ध षड्यन्त्रों की खोजबीन करता था। उसका उद्देश्य था–भारत का शहंशाह बनना।

मीरन सोचता था, "सिराजुद्दौला के मरने के बाद मेरा ही शासन का अधिकारहै क्योंकि मैं ही अलीवर्दी खाँ की बहन का एकमात्र लड़का हूँ।"

अतः उसने रायदुर्लभ एवं मीरजाफर के इर्दगिर्द अपने व्यक्ति-गत जासूस लगा दिये तथा एक बार रायदुर्लभ के मकान को अपने मित्रमंडली के साथ घेर लिया पर नवाब मीरजाफर के कहने परउसे रुकना पड़ा। अंग्रेजों को भी यह अच्छा नहीं लगा क्योंकि अंग्रेज रायदुर्लभ से पैसा लेते थे।

अपनी निरंकुश हरकतों में नवाब के विरोधों से रुष्ट होकर मीरन ने नवाब मीरजाफर की हजारों लोगों की भीड़ में मुहर्रम के महोत्सव के समय इमामबाड़े जाते समय में हत्या की योजना बनायी पर वह सफल न हो सका क्योंकि नवाब का पथ एका-

एक बदल गया। मीरन राजगद्दी की ओर से निराश होकर व्यभिचार में लिप्त हो गया एवं अविवाहित कन्याओं एवं सुन्दर औरतों को सताने लगा। धनी लोगों को भय दिखाकर धन ऐंठने लगा एवं मीरजाफर के स्थान पर स्वयं हुकुमनामें निकालने लगा। मीरजाफर मीरन से डरता था एवं अफीम खाकर ही पड़ा रहता था। उसका कहना था, "मुझे तो एक गोली अफीम चाहिए, राजकाज मीरन देखेगा।"

अतः मीरन वस्तुतः मुर्शिदाबाद का नवाब हो गया पर जनता उसे ग्रहण न कर सकी। एक बारकी घटना है कि एक एक दिन ब्राह्मण उसकी स्त्री, पुत्रवधू एवं उसकी एक कन्या को मीरन के लोग जाफरागंज प्रासाद में पकड़ लाये। लड़कियों का रोना-चिल्लाना सुनकर साहखानूम मीरजाफर की बेगम ने उनकी रक्षा की एवं मीरन ने कहा, "मेरे जीते-जी उन्हें कोई हाथ नहीं लगा सकता।"

बाद में बेगम ने उन्हें अपने ही आदमी देकर बनारस भेज दिया। तबसे मुर्शिदाबाद के लोग साहखानूम को जगदम्बा बेगम बोलते थे। साहखानूम मीरजाफर को भी मीरन के अत्याचार से बचाया। पर, अन्त में बेगम से मीरन का महल के भीतर का अन्याय नहीं देखा गया एवं वे अपने दामाद मीरकासिम एवं लड़की फतेमा के साथ रहने लगीं। मीरन एवं उसके लोग भी साहखानूम बेगम एवं मीरकासिम को अच्छी दृष्टि से नहीं देखते थे एवं उनमें विद्वेषभाव हो गया।

पूर्णिया के नवाब काजेम अली खाँ मीरजाफर को गद्दी से हटाना चाहते थे। जब यह राज खुल गया तो वे माफी माँगने लगे। मीरजाफर ने सभी को माफ कर दिया पर मीरन का

दिल साफ नहीं हुआ। उन्हें पतंगबाजी का बहुत शौक था। जब काजेम अली खाँ पतंग उड़ाकर जा रहे थे तो मीरन ने उसका कत्ल कर दिया। इसी प्रकार मीरन ने ख्वाज हदी की हत्या की। मीरजाफर अपने योग्य कार्यकारी ख्वाज हदी की हत्या पर आर्तनाद कर उठे एवं बोले, "षड्यंत्र करके गद्दी लेना तो आज की परम्परा है। उसके लिये हत्या एक पाशविक दण्ड है।" कोई भी ठीक समझने वाला व्यक्ति इसे न्यायोचित कदम नहीं कह सकता था।

पर मीरन को यही गम था, "मैं शासन का अधिकारी हूँ पर बाप के रहते हुए बेटा कैसे नवाब बन सकता हूँ।" यह बात उसके कानों में बार-बार प्रतिध्वनित होती रही। यही कारण है कि सभी पुराने चित्रों में मीरजाफर एवं मीरन एक साथ समान श्रेणी के दिखाये गये हैं। मीरन ने अफगान सेनापति दिलीर खाँ एवं असलात खाँ को हटा दिया। इन दोनों ने मीरजाफर को नवाबी पाने में बहुत सहायता दी थी। मीरजाफर मीरन के निरंकुश कार्यों से दुश्चिन्ता में पड़ गये। ये लोग कर्मच्युत होकर बिहार चले गये तथा पठान जमींदारों से मिलकर और शहजाद से मिलकर वे आक्रमण की योजना सफल करने में लग गये।

शाहजादा अली गौहर ने बिहार पहुँच कर स्वयं को बादशाह घोषित कर दिया एवं अयोध्या के नवाब शुजाउद्दौला को अपना मन्त्री बनाया एवं सभी को हुकुमनामे भेजे। क्लाइव के पश्चात्, मद्रास से कैलोड को बंगाल का सेनापति बनाकर लाया गया। अंग्रेज पन्द्रह सौ एवं मीरन पन्द्रह हजार सेना लेकर पटना की ओर गये।

एक बार नवाबी सेना जीती। अन्य बार बादशाही सेना

जीती । अन्त में कैप्टेन नक्स ने बादशाही फौज पर आक्रमण करके सेना को अस्त-व्यस्त कर दिया ।

उसके पश्चात् उन्होंने पूर्णिया के नवाब खादेम हुसैन के विरुद्ध व्यवस्था की । कैप्टेन नक्स के नेतृत्व में सेना पूर्णिया पर आक्रमण करने गयी । राजा संतार राय ने अपनी अल्पसंख्यक सेना दी एवं वे कैप्टेन नक्स के साथ गये । पूर्णिया के नवाब पराजित हुए । मीरन वर्षा होने के कारण लौटना चाहते थे पर कर्नल के लोग पूर्णिया के नवाब का पैसा हथियाना चाहते थे । धन-सम्पत्ति प्राप्त करना अंग्रेज सेनापति का मुख्य काम था । यह तो अंग्रेजों ने बाद में समझा कि राजनैतिक सत्ता के साथ ही पैसा स्वतः चला आता है । मीरन ने उसका पीछा न किया । फलतः अंग्रेजों के हाथ पैसा न लगा । अंग्रेज इस बात से मीरन से क्षुब्ध हो गये ।

प्रचण्ड वृष्टि हो रही थी । अतः मीरन ने बादशाही तम्बू 'दिली रखानिपाल' में शरण ली । उसके साथ महिलायें नहीं गयीं एवं केवल दो लोग गये । उसमें एक का काम था उसके पैर दबाने का एवं दूसरे का उसे कहानी सुनाकर सुलाने का । सभी सो गये । अंग्रेज कहते थे कि तम्बू में प्रचण्ड वज्राघात हुआ एवं तीनों मारे गये । मीरन के माथे में पाँच-छह छिद्र देखे गये । उसकी पीठ एवं पेट में भी दाग पड़ गये थे एवं अंग्रेजों ने उनका पेट भी काट दिया था ताकि मृतदेह में दुर्गन्ध न आये जो कि मुस्लिम रस्म के विरुद्ध है । अतः दूसरा मत स्वीकार्य योग्य है कि शिकार के समय अंग्रेजों ने दोनों ओर से तीर चलाकर धोखे से मीरन की हत्या कर दी ।

मीरन की देह को अंग्रेज एक रोगी मनुष्य की भाँति हाथी की पीठ पर लाये जिस प्रकार सिराजुद्दौला की मृतदेह को मीरन ने हाथी की पीठ पर रखकर घुमाया था। पर उसकी लाश गन्ध करने लगी। इससे केलोड ने उसकी लाश नाव में रखकर भेज दी। बाद में शरीफा बाजार में मीरन को कब्र दी गयी।

मीरजाफर सिर पर हाथ रखकर रोने लगे, "क्या इसीलिए मैंने अंग्रेजों से सन्धि की थी ?"

पर अन्याय एवं दुष्कर कार्यों में समझौता, कोई समझौता नहीं, वह केवल एक दूसरे के हानि करने की बाट जोहना है।

□

: ८ :

जब मीरजाफर गद्दी पर बैठा, सभी पुराने राजघराने के सदस्य उसे संदेह की दृष्टि से देखने लगे। वास्तव में राजद्रोह की नींव पर खड़े राज्य में शक एवं षड्यंत्र ही राज्य करते हैं। राजद्रोहियों का न तो उनके परिवार वाले ही विश्वास करते हैं न उनके काल का समाज। आने वाला काल तो उन पर थू-थू करता है।

युद्ध में जाने के पूर्व मीरन ने राजा दुर्लभराय को दीवान के पद से हटाकर राजबल्लभ को दीवान बनाया था। अतः सभी पुराने लोग भी अप्रसन्न हो गये।

मीरन मीरजाफर को अंग्रेजों की कोई बात नहीं मानने देता था। मीरजाफर से अधिक अंग्रेज रायदुर्लभ पर विश्वास करते थे। अतः इसको हटाने से अंग्रेजों को अपना सीधा अपमान लगा।

मीरन ने तीन सौ स्थानीय लोगों की सूची बनायी थी, जिन्हें वह कल बल से मारना चाहता था। इसने कुछ अबलाओं का भी शिरोच्छेद किया एवं उसके बाद वह अंग्रेजों से बदला लेता। पर मीरजाफर के दरबार में अंग्रेजों के गुप्तचर थे। क्लाइव जैसे मीरजाफर के विश्वसनीय पात्र ने भी तत्कालीन ब्रिटिश प्रधान मन्त्री को लिखा, 'मीरजाफर के मन में जब जो आयेगा मित्रता एक कोने में रखकर वह काम करेगा।" अतः अंग्रेजों ने नवाब के विरुद्ध अपराधों की सूची तैयार करवायी।

वृद्ध नवाब भी खूब लोभी और अत्याचारी हो गये थे। वे कुछ लोगों की सलाह पर चलते थे एवं उनकी बात का कुछ ठीक-ठिकाना न था। उन्होंने सेनापति ख्वाजा खादिम एवं मीर-काजिम की हत्या करवायी एवं अलीवर्दी, सिराज एवं नवाजस परिवार की भी ढाका जाते समय हत्या करवायी।

अंग्रेजों ने नवाब से कहा, "देश में जो अभाव एवं मूल्यवृद्धि हुई उसका दायित्व भी नवाब पर है।"

नवाब मीरजाफर ने उत्तर दिया, "कोषागार की सब धन-राशि तो आप लोगों को दे दी है। आपके नीलकुटी के व्यापारी न कोई टैक्स और न कोई चुंगी देते हैं एवं सभी को मैंने जागीरें बाँध दी हैं। मुझसे अधिक खर्च तो आपके रेजीडेन्ट का है।" इसके अतिरिक्त भी गवर्नर की कौंसिल के सभी सदस्य निरन्तर मीरजाफर से पैसों की माँग करते थे। मीरजाफर का १७५७-६० का समय आन्तरिक विद्रोह एवं युद्ध में ही कट गया।

मीरन की मृत्यु के पश्चात् नवाबी सेना लौट आयी। तीन वर्ष का वेतन सैनिकों को नहीं मिला था। मीरन भी पटना से धन नहीं ला पाया था, क्योंकि वह तो अंग्रेजों ने लूट लिया था। अतः सेना ने वृद्ध नवाब मीरजाफर को गालियाँ दीं एवं कर्मचारियों को वे पीटने लगे। सैनिकों ने वृद्ध नवाब को हरम से बाहर निकाला एवं निजामत का घेराव किया। मीरजाफर को बचाने के लिए मीरकासिम ने तीन लाख रुपये दिये एवं बकाया के लिए अपनी जमानत दी। सभी ने विश्वास कर लिया, क्योंकि सभी मीरकासिम की धन-सम्पत्ति के विषय में परिचित थे। पर मीरकासिम ने मीरजाफर से वचन ले लिया कि वह उसे मीरन के स्थान पर रखेगा एवं बेताज का बादशाह बनायेगा किन्तु मीरजाफर ने वह वचन नहीं रखा एवं मीरकासिम को पूर्णिया का फौजदार बनाकर भेज दिया।

मीरकासिम अलीवर्दी खाँ की बहन साहखातून एवं मीरजाफर की प्रथम पत्नी का दामाद था पर मीरजाफर अपने दामाद एवं मीरन अपने जीजा का विश्वास नहीं करता था। सिराजुद्दौला के समय मीरकासिम फौजदार मीरदाऊद का नायब फौजदार था। सिराज की बेगमों को पकड़ते समय उसने रत्न, धन, हीरा-जवाहरात एवं जड़ाऊँ जेवरात ले लिया था। लुत्फुन्निसा का बक्सा भी मीरकासिम के हाथ लग गया जिसमें दो करोड़ रुपये के हीरे-जवाहरात थे। मीरजाफर से भी अधिक सम्पत्ति मीरकासिम के पास थी। उसने वह नष्ट नहीं की। मीरकासिम की पत्नी बेगम फतेमा एक कंजूस महिला थी। वह अन्य बेगमों की तरह खर्चीली नहीं थी। दुर्दिन के लिए उसने धन जोड़ा। इसलिए उसने प्रथम उसे रंगपुर का फौजदार बनाकर भेज दिया था।

१७६० फरवरी में मीरकासिम की मुलाकात हलवेल से हुई। वह मिदनापुर में नवाबी सेना लेकर डच (बर्गियों) का आक्रमण रोकने हलवेलन के साथ गया था। वहाँ हलवेल से मुलाकात से हलवेल ने उसे पटना का नायब नाजिम बनाने की सोची एवं वे मीरजाफर की अक्षमता के विषय में सामग्री एकत्रित करने लगे जो कौंसिल में पेश की जा सके। हलवेल भी मीरकासिम की गद्दी देकर क्लाइव की भाँति मालामाल होने की सोचने लगा। मीरकासिम भी कौंसिल के अध्यक्ष को भेंटें भेजता रहा।

पूर्णिया में रहकर मीरकासिमने नवाब का खुला विरोध आरंभ किया एवं नवाब की अध्यक्षता के लिए कलकत्ता कौंसिल को एक चिट्ठी-पत्री लिखी। जब भ्यान्सिटर्ट कलकत्ते आये तो राजकोष शून्य हो गया था। लन्दन से ईस्ट इंडिया कम्पनी भी पैसा

नहीं भेज रही थी। बंगाल के पैसे से ईस्ट इण्डिया कम्पनी का पूरे देश का खर्च चलता था। अतः गवर्नरको हलवेल का सुझाव पसन्द आया कि अक्षम एवं मित्र नवाब से तो दक्ष शत्रु नवाब अच्छा है। कम से कम राजस्व तो ठीक व्यवस्था करके कमायेगा एवं ईस्ट इण्डिया कम्पनी को देगा।

अतः योजनानुसार मीरकासिम को गुप्त रूप से कलकत्ते बुलाया गया एवं कौंसिल के साथ मीरकासिम की गुप्त सन्धि हुई कि मीरजाफर नाम का नवाब रहेगा पर मीरकासिम पूरा राजकाज चलायेगा एवं अंग्रेजों का सभी ऋण परिशोध कर देगा।

कैलोड ने मीरन के नाबालिग लड़के का प्रस्ताव किया कि वह राजबल्लभ की छत्रछाया में शासन चलायेगा पर हलवेल एवं अध्यक्ष मीरकासिम के समर्थन में थे। सभी पैसे का खेल था।

मीरजाफर ने दाऊद खाँ का प्रस्ताव किया पर धन के लोभ के कारण अंग्रेजों ने मीरकासिम का समर्थन किया। कम्पनी ने चटगाँव की दीवानी का प्रस्ताव किया पर मीरजाफर ने इन्कार कर दिया। अतः मीरकासिम के साथ गुप्त सन्धि हुई कि मीरजाफर नवाब रहेंगे पर आजिमाबाद एवं उड़ीसा की नवाबी मीरकासिम खाँ के पास चली जायेगी। उसके लिए मीरकासिम ने निम्न रिश्वतें दीं—

भ्यान्सिटर्ट	५	लाख रुपया
हलवेल	२·७०	लाख रुपया
सामनार	२·४०	लाख रुपया
कर्नल कैलोड	२	लाख रुपया
मेजर हेमर्क	१·३४	लाख रुपया
एवं अन्य	४	लाख रुपया

योजना के अनुसार हेयर्क सेना लेकर मुर्शिदाबाद गये। गवर्नर भ्यान्सिटर्ट एवं सेनापति कैलोड ने भी मुर्शिदाबाद की यात्रा की।

नवाब से कहा गया कि ये विराट सेना अर्थात् २ कम्पनी गोरी फौज, चार कमान तोपची एवं एक हजार लाल पल्टन पटना में गोरी सेना की सहायता के लिए जा रही है। पटना में भी वेतन न देने के कारण सेना ने राजबल्लभ के घर का घेराव किया था। भ्यान्सिटर्ट ने मीरजाफर के साथ पाँच दिन मुलाकात की एवं उनकी शासन अव्यवस्था के विषय में कहा एवं एक उपयुक्त व्यक्ति को शासन व्यवस्था देने को कहा।

मीरजाफर से कहा गया "मीरकासिम के अतिरिक्त और कौन है?"

भ्यान्सिटर्ट ने कहा, "यदि मीरजाफर ने गद्दी न छोड़ी तो हम कर्नल कैलोड से सैनिक कार्यवाही करायेंगे।"

मीरजाफर ने उत्तर दिया, "जिसके भाग्य में जो होगा सो होगा। मैं पूरी शक्ति से अंग्रेजों को बाधा दूँगा।"

इसी बीच नवाब को बताया गया कि कर्नल कैलोड ने महल का घेराव कर लिया है। अतः मीरजाफर अपने दामाद को गद्दी देने के लिए तैयार हो गया एवं २१ अक्टूबर १७६० को मीरकासिम गद्दी पर बैठा। मीरकासिम से गवर्नर ने कहा, "तुम्हें फौज का काफी भुगतान करना होगा। बादशाह मीर-जाफर के पास राजस्व का वार्षिक हिसाब भेजना पड़ेगा एवं उनके सम्मान एवं जीवन की रक्षा करनी होगी एवं उपयुक्त प्रतिमास भत्ता देना होगा।"

मीरजाफर ने 'एवमस्तु' कहकर अंग्रेजों की सभी शर्तें स्वीकार कर ली।

□

: ९ :

त्रिपक्षीय समझौता के अनुसार मीरक़ासिम को गद्दी देने की व्यवस्था हुयी।

मीरजाफर को डर था, "मैंने सिराजुद्दौला के साथ जो व्यवहार किया था, यदि वही व्यवहार मेरे साथ हुआ तो क्या होगा ?"

अतः मीरजाफर ने कहा, "मुझे मुहर बादशाह बनकर यहाँ नहीं रहना है। आप मेरे कलकत्ते जाने की व्यवस्था करें। मेरी यहाँ सुरक्षा नहीं है।" मीरकासिम ने कहा, 'आप मेरे ससुर हैं। अतः मैं आपके साथ वह व्यवहार नहीं कर सकता जो आपने सिराज के साथ किया था।" उस पर मीरजाफर ने प्रश्न किया, ' तो क्या आपने साधुवाद से नवाबी हासिल की है।"

मीरकासिम ने तपाक से उत्तर दिया, "मसनद एवं नवाबी हासिल करना तो एक खेल है। अतः उसमें एवं प्रेम में सभी मान्य हैं। आपने एवं हमारे पूर्वजों ने यही सिखाया है कि खून बहाकर भी धरती का बादशाह बनना। अतः आपको यह खेल भावना से समझना चाहिए।"

मीरजाफर मीरकासिम की इस शतरंज की चाल को खिलाड़ी भावना से न ले सके। अतः उन्होंने भ्यान्सिटर्ट से कहा, "आपके शासन का मैं गुलाम रहा हूँ। अतः आपके शरणापन्न हूँ। आप मुझे इस नरक से निकालकर जीवन की खुली हवा में ले चलें।"

भ्यान्सिटर्ट ने कहा, "जिन राजमहलों की हवा की खातिर तुमने प्लासी में राजद्रोह किया, वही हवा अब तुम्हें काटने लगी है।" मीरजाफर ने बहुत अनुनय-विनय पूर्वक कहा, "अब वृद्धावस्था में यह जीवन एवं नवाबियत के दाँव-पेंच न तो खेले जा सकते हैं और ही न अच्छे लगते हैं। अब तो मैं एकान्त में अल्ला में मन लगाना चाहता हूँ।"

भ्यान्सिटर्ट राजी हुए एवं दूसरे दिन ही मीरजाफर ने सपरिवार कलकत्ते की यात्रा की। वाटसन के अधीन एक गोरी फौज नवाब के साथ चली।

मीरजाफर ने अनुरोध किया, "आप मुझे छोड़ दो। हम इराक चले जायेंगे ताकि इराक में कर्बला में मरूँ।"

अंग्रेजों ने सोचा, "यह जाकर दिल्ली में षड्यंत्र कर सकता है अथवा जैसे हुमायूँ ने ईरान में भागकर फिर से हिन्दू राजाओं को हराया था, वैसे ही मीरजाफर हमें भारत से भगाने का प्रयत्न करेगा।"

अतः अंग्रेजों ने मीरजाफर को गिरफ्तार कर लिया एवं नजरबन्द करके कलकत्ते में रख दिया। वह जगह आजकल 'वैंगसल कोर्ट' के नाम से कलकत्ते में प्रसिद्ध है।

अंग्रेजों के साथ सन्धि के अनुसार मीरकासिम को अंग्रेजों का सभी ऋण चुकाना था। मीरकासिम ने नवाब होने के बाद ही कम्पनी के लिए वर्द्धमान, मेदिनीपुर एवं चटग्राम की जमींदारी छोड़ दी। वर्द्धमान के राजा तिलकचन्द को यह पसन्द नहीं आया, क्योंकि कुछ आय नहीं हो रही थी। अत तिलकचन्द एवं वीरभूम के राजा ने मिलकर अंग्रेजों से दामोदर के तीर पर मुकाबला किया पर वे हार गये।

४

मीरकासिम ने प्रयत्न किया एवं निजामत का खर्च कम किया। जमींदारों के पास से नजराना रुपया लेकर सैन्यदल का बाकी वेतन चुका दिया।

शाहआलम के लोगों के साथ नन्दकुमार को बन्दी बनाया। इसके बाद वीरभूम के राजा का दमन किया एवं पटना के लिए प्रस्थान किया। पटना के नायब नाजिम रामनारायण को राजस्व का हिसाब देने को कहा। पर उसने ध्यान नहीं दिया, क्योंकि क्लाइव कह गये थे कि अंग्रेजों को हमेशा रामनारायण का ध्यान रखना चाहिए। इसीलिए कर्नल कैलोड का उन्हें पूरा समर्थन था। स्थानीय कर्नल ने कलकत्ते से हरा झण्डा मिलने के बाद रामनारायण का समर्थन किया पर कलकत्ते ने कहा कि नवाबी की भी बेइज्जती न हो। मीरकासिम ने यह पूरी घटना कौंसिल को लिखी।

मीरकासिम ने लिखा,

"जिस प्रकार रामनारायण का समर्थन करके कम्पनी ने नवाब के कार्यक्षेत्र का अतिक्रमण किया है इसी प्रकार यदि चलता रहा तो कम्पनी राजस्व के लिए भी नवाब को जिम्मेदार नहीं ठहरा सकती है एवं छोटे-मोटे विवाद भी कम्पनी के प्रभुओं को आकर निबटाना पड़ेगा। कम्पनी का यह कार्य मेरे आन्तरिक मामलों में मूल दखलन्दाजी के अतिरिक्त और कुछ नहीं।" पर जिसकी लाठी उसकी भैंस। कम्पनी अपनी प्रभुसत्ता कायम करने के लिए सभी सिद्धान्तों की उपेक्षा किये जा रही थी।

कम्पनी की ज्यादतियों, नमक एवं नील के व्यापार में अंग्रेजी व्यवसायियों की मनमानी एवं मुनाफाखोरी से परेशान होकर मीरकासिम ने सभी लोगों के व्यापार से कर उठा दिया। मीरकासिम ने कौंसिल से शिकायत की पर सभी कान में तेल

डालकर बैठ गये एवं कलकत्ते के प्रभु मीरकासिम के विरुद्ध मुनाफाख़ोर एवं कालाबाजारी करनेवाले अंग्रेज व्यापारियों का समर्थन करने लगे एवं कई बार उन्होंने मीरकासिम को उसकी इस कार्यवाही के प्रति असन्तोष भी व्यक्त किया। अंग्रेजों ने नवाब के एक कर्मचारी मन्साराम को गिरफ्तार किया क्योंकि वह अफीम का व्यवसाय करता था। दूसरे गुरगिन खाँ के भाई खोा आन्टन ने अंजग्रेज कम्पनी के लोगों के पास से पाँच मन सोडा लिया। उसे भी एलिस ने गिरफ्तार करके कलकत्ते विचार के लिए भेज दिया। नवाब के एक दूत खोजा पेत्रुस को कलकत्ता कौंसिल ने गिरफ्तारक र लिया एवं गवर्नर भ्यान्सि-टर्ट की भी बात न मानी तथा बीस लाख रुपये की माँग की। मीरकासिम मुंगेर चला गया एवं उसने कहा, 'मुझे किसी का एक रुपया भी नहीं देना है और न ही मैं आपकी माँग को पूरा करूँगा। जिन कर्मचारियों ने अन्याय किया है उन्हें दण्ड मिलना चाहिए।" परन्तु ऊपर वालों के समर्थन से अंग्रेज लूट-पाट में व्यस्त थे। वे बिना टैक्स के नीलकुटी से व्यवसाय चलाते थे। वे सभी व्यक्तिगत फायदे में संलग्न थे।

मीरकासिम अपने साथ धनकुवेर महतपराय एवं उसके भाई महाराज स्वरूपचाँद को मुंगेर लाया। मीरकासिम ने इसी बीच अंग्रेजों की कई अस्त्रपूर्ण नौकाएँ जो मुंगेर की ओर आ रही थीं, रोकी। नवाब ने कहा कि एलिस उनका विरोधी था एवं वे अस्त्र पटना जा रहे थे एवं उनके विरुद्ध उपयोग होने वाले थे। नवाब ने सेनापति मार्क के अधीन में एक फौज पटना पर अधिकार करने भेजी। एलिस पराजित हुए एवं खास अंग्रेज मारे गये बाकी अंग्रेज बन्दी बनाये गये। मीरकासिम ने एमिट की कलकत्ते जा रही नौका को भी रोका। एमिट युद्ध में मारे गये एवं नौका को नवाब ने बन्दी बनाया।

□

: १० :

मीरकासिम की कार्यवाहियों से असन्तुष्ट होकर कौंसिल ने वृद्ध मीरजाफर से संधि करने की सोची। मीरजाफर ने कहा, "आप लोगों ने तो मुझे नजरबन्द करके बहुत कष्ट दिया। अब क्यों एक बन्दी को बादशाह बनाना चाहते हो। मुझे शान्ति से कर्बला जाकर मरने दो।" पर कौंसिल ने कहा, "आप ही ऐसे व्यक्ति हैं जिन पर अंग्रेजों एवं कम्पनी को पूर्ण विश्वास है।" मुन्नी बेगम ने मीरजाफर को सलाह दी, "ये लोग तुम्हें अपना नवाब बनाकर रखना चाहते हैं। ये तुम्हें एवं हमें इराक भी नहीं जाने देंगे। अतः नवाब बनकर अपने पुराने और मुर्शिदाबाद के मसूरगंज महल में ही मरना अच्छा रहेगा।" मीरन की मृत्यु के पश्चात मीरजाफर की मुन्नी बेगम ने बन्दी समय में अत्यन्त सेवा-सुश्रूषा की, अतः मीरजाफर की मुन्नी बेगम सबसे अधिक विश्वास पात्र हो गयी और मीरजाफर मीरन की भाँति ही मुन्नी बेगम की बातें मानने लगा।

मुन्नी बेगम ने अपने लाखों रुपयों के हीरे जवाहरात जड़े सोने के आभूषण निकाले और कौंसिल के सदस्यों में कई लाख रुपये उपहार के तौर पर वितरित किये। अतः इस प्रकार के सुअवसर की तलाश में सभी थे क्योंकि मीरकासिम के नवाब बनने के पश्चात कोई बड़ी रकम कौंसिल के सदस्यों के हाथ नहीं लगी एवं मीरकासिम द्वारा नवाबियत के लिए दी गई रिश्वत के बाद में आये सभी सदस्यों के मुँह में पानी आ रहा

था एवं वे भी पुराने सदस्यों की भाँति मालामाल होकर इंगलैंड वापिस लौट जाना चाहते थे। अतः गद्दी-परिवर्तन आवश्यकीय हो गया था।

मुन्नी बेगम के द्वारा दी गई रिश्वत के लिए सभी अंग्रेज प्रभु भूखे सिंह की भाँति लपक पड़े। उन्होंने मीरजाफर को सूबेदार एवं नन्दकुमार को उसका दीवान बनाने का निश्चय किया। एवं उसी प्रकार मीरकासिम एवं उसके सहयोगियों को हराने की राजनीति अपनायी। उसी के अनुसार मेजर एडामस के नेतृत्व में एक सेना ने प्रस्थान किया। मेजर एडामस से कहा गया, 'मीरकासिम ने सभी हिन्दू राजाओं से मिलकर हमें भारत से निकालने का षड्यन्त्र रच रखा है। अतः यह हमारे अस्तित्व के लिए लड़ाई है। हमें अपने रक्त की आखिरी बूँद तक लड़ना पड़ेगा। मेजर ग्लेन ने वर्द्धमान से प्रस्थान किया, मीरकासिम ने अपने सेनापति म्हायवत उल्ला को मुकाबला करने भेजा पर करवा के दुर्ग की तोपें खराब हो गयीं। अश्वारोही सेना अधिक होने पर भी अंग्रेजों की बन्दूकों एवं तोपों के सामने वे कुछ न कर सके। नवाब की सेना लौट आयी। मीरकासिम ने सेना की इस हार पर कहा, "आप ही हमारे विरोध में हैं। मैंने अंग्रेजों को भारत से खदेड़ने के लिए सभी राजे-रजवाड़ों में ऐक्य स्थापित किया। पलासी के युद्ध से सबक सीखकर अश्वारोही सेना इत्यादि का भी संगठन किया पर अंग्रेज किसी न किसी प्रकार हमसे जीत जा रहे हैं। अब तो अल्ला ही हमारा रखवाला है। हम अंग्रेजों की पुरानी रणनीति को भेदने की सोचते हैं। अंग्रेज और नई नीति अपना लेते हैं।" उधर नवद्वीप की ओर से अग्रद्वीप में मेजर एडामस की सेना ने टकी खाँ पर आक्रमण किया एवं टकी खाँ मारे गये।

मीरजाफर भी एक सेना लेकर मुर्शिदाबाद पहुँचे और उसको आगे रखकर अंग्रेजों ने फिर लड़ाई शुरू की। मीरजाफर के पीछे थे—राजा नन्दकुमार, महाराज दुर्लभराय एवं खोजा पित्रस। टकी खाँ की पराजय सुनकर सेनापति फौजफार मुर्शिदाबाद की राजधानी छोड़कर भाग गये। २३ जुलाई, १७५९ को नवाब मीरजाफर दुबारा गद्दी पर बैठे।

चार दिन में एडामस भी मुर्शिदाबाद चले आये एवं उनके साथ मीरजाफर ने योगदान दिया। बांसलई नदी के पास मीरकासिम ने अपनी चालीस हजार सेना के साथ पड़ाव किया।

गिरिया युद्ध हुआ। अंग्रेजों की सेना थी मात्र पाँच हजार पर मीरकासिम के कई यूरोपीय तोपची दूसरी ओर चले गये।

गिरिया की हार के बाद नवाब ने निश्चय किया कि मुंगेर के अतिरिक्त और अन्य जगह जाना पड़ेगा।

मीरकासिम को सन्देह था कि हिन्दू राजाओं ने उसके साथ षड्यन्त्र किया था जैसा उन्होंने सिराजुद्दौला के साथ किया था। अतः मीरकासिम ने सभी बन्दी राजाओं को कत्ल करने का आदेश दिया। मुंगेर दुर्ग में अवस्थित राजा रामनारायण, जगत-सेठ, महातब चाँद, उसके भाई महाराजा स्वरूप चाँद, सुपुत्र राजा राजबल्लभ, उमेंदराम, बिहार के जमींदार राजा फतेह सिंह, बुनियाद सिंह सभी मारे गये। जगतसेठ के गले में रेते का घड़ा बाँधकर मुंगेर दुर्ग की मीनार से उन्हें फेंक दिया गया एवं वे डूबकर मर गये।

मीरकासिम के इस कृत्य से सेनापतियों के बीच अन्तर बढ़ गया एवं मीरकासिम भी किसी पर विश्वास नहीं कर सकता था।

गिरिया की लड़ाई जीतने के बाद मेजर एडामस और नवाब मीरजाफर ग्यारह अगस्त को औधूनाला से चार मील दूर पालकिपुर ग्राम के पास आये एवं मीरकासिम की दीवाल में सजायी हुई तोपें देखीं। अतः मेजर एडामस ने निश्चय किया कि गंगा के पास से ही युद्ध करना ठीक था। रात में मीरकासिम के सेनापति मीरनजफ खाँ ने नाले की ओर से मीरजाफर की सेना एवं शिविर पर आक्रमण करके नवाब को विभ्रान्त कर दिया।

अंग्रेजों के आक्रमण से भी मीरकासिम की तोपों पर असर न पड़ा, क्योंकि बे दीवालों में चुनी थीं। मेजर एडामस को पीछे हटना पड़ा। खोजा पित्रस, मीरजाफर के साथ थे। पित्रस इसके पूर्व मीरजाफर के विरुद्ध अंग्रेजों के साथ थे। मीरकासिम का सेनापति गुरगिन खाँ एवं खोजा ग्रेगरी खोजा पित्रस का भाई था। एक आदमी रात्रि में अंग्रेजों के पास चला आया एवं उसने दुर्ग रचना का रहस्य खोल दिया। रात को ही अंग्रेजों की फौज नाले के उथले रास्ते से औधूनाला दुर्ग के पास आ पहुँची एवं सोते हुए सन्तरियों की हत्या कर दी और अंग्रेज सेना दुर्ग के अन्दर चली गयी तथा प्रकाश से अंग्रेजों की सेना को संकेत दिया। इससे अंग्रेजों ने बाहर एवं भीतर दोनों ओर युद्ध छेड़ दिया। सोते हुए मीरकासिम की सेना मीरजाफर एवं अंग्रेजों की सेना के हाथों मारी गयी। मीरकासिम की सेना भाग निकली। अंग्रेज विजयी हुए। मीरकासिम मुंगेर की ओर चला गया।

मीरकासिम ने एडामस को एक पत्र दिया पर सन्धि की आशा न देखकर एलिस आदि प्रमुख बन्दियों की हत्या कर दी। मीरकासिम ने सैन्य बल के साथ पटना की यात्रा की। रास्ते में

उसके ईरानी सेनापति गुरगिन खाँ की मुगलों से मुकाबला करने से मृत्यु हो गयी। किलेदार ने षड्यन्त्र एवं विश्वासघात करके मुंगेर का दुर्ग अंग्रेजों के हाथ में दे दिया। सभी स्थानों पर विश्वासघात ही पासा पलट रहा था।

मीरकासिम ने वहाँ से पलायन करते समय दस अंग्रेजों को बाहर निकाल कर हत्या कर दी। बाकी अंग्रेज कारागार से बाहर जाने के लिए राजी न हुए तब कारागार के भीतर गोली चलायी गयी। अंग्रेज बन्दियों ने मेजों एवं कुर्सियों से स्वयं को बचाया पर कोई न बचा। पटना के उस हत्याकाण्ड में कुल एक सौ पचास अंग्रेज निहत हुए। केवल डा० फूला रटन बच पाये। वे नवाब एवं बेगम की चिकित्सा करते थे। उस हत्या-काण्ड को सुनकर कलकत्ता में कौंसिल ने मीरकासिम को जिन्दा पकड़ कर लाने वाले को एक लाख रुपये के पुरस्कार की घोषणा की पर मीरकासिम को कोई न पकड़ पाया।

मीरकासिम ने हरम की सभी बेगमों को मुक्ति दे दी एवं बेगम फतेमा को रोहिलखण्ड भेज दिया। पालकी में बेगमों के साथ राजकोष का बहुत सा रत्नकोष भी भेज दिया। उस काफिले में थे—१५०० पालकी एवं बैलगाड़ियाँ, १०० हाथी, १२०० घोड़े एवं ३ ऊँट।

दूसरी ओर मीरजाफर एवं मेजर एडामस पटना की ओर चले। मीरकासिम ने पटना छोड़कर रोहतास दुर्ग में शरण ली। अधिकांश मुसलमान सेनाध्यक्ष मीरकासिम को छोड़कर मीर-जाफर के दल में मिल गये, क्योंकि मीरकासिम द्वारा निहत्थे एवं निरपराध लोगों की नृशंस हत्याकाण्ड किसी से भी नहीं देखा गया। बेगमों के पैसा ले जाने से राजकोष कम हो गया

तथा युद्ध एवं सेना का खर्च चलाना मुश्किल हो गया। विपरीत परिस्थितियों में मीरकासिम ने अयोध्या के नवाब के यहाँ शरण ली। इस तरह मीरकासिम का स्वाधीन सूबेदारी का स्वप्न न केवल धूल-धूसरित हो गया अपितु उसे जान के लाले पड़ गये।

अयोध्या के नवाब शुजाउद्दौला के पास उस समय बादशाह शाहआलम भी थे। अंग्रेजों ने बुद्धि का खेल खेला। उन्होंने शाहआलम को लिखा, "मीरकासिम लाख-लाख रुपया बंगला-देश से लेकर भाग गये हैं। बादशाह के सभी प्राप्य रुपये उसके पास ही मिलेंगे।"

सभी जानते थे कि मीरकासिम पैसे को जोड़कर रखता था।

शुजाउद्दौला ने मीरकासिम को इलाहाबाद के निकट घेरा। मीरक़ासिम ने उन्हें आवश्यक नजराना दिया।

इसके बदले में बादशाह शाहआलम एवं नवाब शुजाउद्दौला ने मीरकासिम को बंगाल की मसनद पर अधिकार दिलाने का वायदा किया। उधर सेनापति मेजर एडामस एक वर्ष तक मीरकासिम के साथ युद्ध करते हुए अस्वस्थ हो गये एवं मेजर नक्सर के ऊपर भार आया। १७६४ में मेजर एडामस कलकत्ता में मर गये। सिकन्दर के साथ उनकी तुलना की जाती थी। एडामस क्लाइव से भी बड़ा सेनापति था, क्योंकि क्लाइव ने पलासी के खाली मैदान में लड़ाई जीती थी जबकि एडामस ने कटवा, मोतीझील गिरिया, औधुयानाला एवं मुंगेर सभी जगह लड़ाई जीती थी।

पटना पर अधिकार करने के पश्चात् मीरजाफर ने गोरी सेना एवं अपने सिपाहियों के मध्य एक लाख रुपये वितरित

किये। इसी बीच मेजर कर्नाक को सेनापति बनाकर भेजा गया। वे बड़े विलासी थे। मीरकासिम ने नवाबी एवं अंग्रेज सेना पास में रहते हुए भी रोहतास दुर्ग से अपनी और वस्तुएँ सेना भेजकर मंगा ली। अयोध्या नवाब शुजाउद्दौला आ रहे थे यह सुनकर दोनों दल आगे बढ़े। शुजाउद्दौला ने सोन नदी पार की और नवाबी एवं अंग्रेज सेना पटना दुर्ग के पास पीछे आ गयी। जब मीरकासिम की सेना गंगा को पार कर रही थी तब नौकाओं का सेतु टूट गया पर अंग्रेज बेखबर थे एवं इसका फायदा न उठा सके।

अंग्रेज एवं मीरजाफर की सेना से शुजाउद्दौला की सेना अधिक थी।

बाद में मीरकासिम को आगे रखकर दायीं ओर द्वितीय शाहआलम एवं बायीं ओर स्वयं वजीर शुजाउद्दौला एवं उनके मंत्री राजा बेनी बहादुर थे।

अंग्रेजों की सेना ने आगे ही आक्रमण कर दिया। तोपों से आक्रमण करके मीरकासिम एवं अयोध्या के नवाब को रोका गया।

किसी प्रकार अंग्रेज सेना को हटाया न गया एवं अंग्रेजों की तोप वृष्टि के समक्ष मीरकासिम एवं शुजाउद्दौला नहीं ठहर पाये। शुजाउद्दौला पीछे बक्सर आ गये। ईस्ट इण्डिया कंपनी के डायरेक्टर बोर्ड ने कलकत्ता कौंसिल को पदच्युत कर दिया। मेजर कर्नाक भी पदच्युत हो गये एवं कलकत्ते लौट गये।

मीरजाफर ने उसके आगे ही पटना की शासन व्यवस्था मीरकाजम एवं रामनारायण के भाई धीरज नारायण को सौंप दी एवं वे मुर्शिदाबाद लौट गये। अंग्रेज सैन्यदल के सेनापति

मेजर हेक्टर मनरो होकर आये। शाहआलम ने अंग्रेजों के साथ संधि करनी चाही किन्तु शुजाउद्दौला एवं मीरकासिम ने इसका विरोध किया एवं बादशाह का घेराव करके रखा। उधर वेतन न मिलने से सेना ने मीरकासिम के तम्बू का घेराव किया एवं मीरकासिम के बेगमों के पास से मुहर लेकर वेतन दिया। मीर-कासिम के सभी साथी रुपया लेकर चले गये। शुजाउद्दौला ने मीरकासिम से बकाया धन लेकर उसे भी विदा किया।

काशी के राजा उसे अंग्रेजों के हाथ में दे देंगे, यह सुनकर वह रोहिलखण्ड की ओर चला गया। मीरकासिम ने बरेली शहर में शरण ली फिर भी उसकी संदेही मनोवृत्ति नहीं बदली न उत्पीड़नकारी स्वभाव ही बदला। उसने कुछ सन्देहजनक लोगों को मरवा डाला। अन्त में बरेली छोड़कर भी उसे जाना पड़ा। वह बाद में दिल्ली गये पर षड्यन्त्र के कारण उसे दिल्ली भी छोड़नी पड़ी। इसके पूर्व मीरकासिम अपनी बेगम फतेमा और बूढ़ी सास को फैजाबाद छोड़ गये थे। बाद में मीरकासिम दिल्ली और आगरा के बीच परवल ग्राम में एक सराय मे मारे गये। उसकी बेगम ने एक कीमती शाल को बेचकर उसके अन्तिम संस्कार का खर्च चलाया। बेगम, सास एवं दो लड़कों ने आखिरी दिन दिल्ली में ही काट दिये।

□

: ११ :

बक्सर में विजय के पश्चात् अंग्रेजों की प्रचुर शक्ति में प्रचुर वृद्धि हो गई। मीरकासिम के साथ लड़ाई में विश्वासघात का प्रश्न कम था व्यूह रचना का अधिक। सिराज के साथ जिन्होंने विश्वासघात किया था उन्हें मीरकासिम ने मार डाला। विश्वासघातियों को वास्तव में दण्ड मीरकासिम ने दिया ताकि आने वाले समय में और देशद्रोही न तैयार हों पर उस समय के प्रशासन के कर्ताधर्ता ये भूल गये कि सिद्धान्त पर नहीं आधारित प्रशासन-तंत्र में विश्वासघात स्वयं ही पनपता है। मीरकासिम स्वाधीनता चाहते थे एवं प्रशासन में हस्तक्षेप पसन्द नहीं करते थे। उन्होंने सेवा के लिए उच्च शिक्षा की व्यवस्था की एवं अस्त्र-शस्त्रों के लिए कारखाना भी बनवाया। पर उस समय राजा अथवा नवाब सेना के सिलसिले व्यक्तिगत सुख-दुःख में भागीदार नहीं होते थे। अतः सेना स्वयं को नवाब से पृथक समझती थी। दूसरे राष्ट्रीयता एवं स्वाधीनता के सिद्धांतों का व्यापक प्रचार एवं प्रसार नहीं था।

शाहआलम एवं शुजाउद्दौला यदि पूरी सहायता करते तो मीरकासिम नहीं हार पाता। शुजाउद्दौला ने अपना व्यूह छोड़-कर अंग्रेजों पर आक्रमण किया। इससे अयोध्या की सेना अंग्रेजों की तोपों के सामने छिन्न-भिन्न हो गयी। अंग्रेजी सेना ने उसके सभी शिविरों की सम्पत्ति एवं युद्ध के उपकरण लूट लिए एवं

शाहआलम को झा चाये एवं मेजर हेक्टर के साथ सन्धि करनी पड़ी।

मीरजाफर ने दुबारा गद्दी पर बैठने पर महाराजा नन्द-कुमार को राजस्व विभाग का दीवान बनाया। मीरकासिम तथा बन्दी नदिया के राजा कृष्णचन्द्र एवं दिनाजपुर के राजा बैद्यनाथ को दो वर्ष बन्दी रहने के बाद छोड़ दिया गया। मीरजाफर हिन्दुओं से प्रेम करता था एवं हिन्दू नायबों पर विश्वास करता था। मीरजाफर राजस्व के विषय में कम ही ज्ञान रखता था पर युद्ध के विषय में वह पूर्ण कुशल था। द्वितीय बार नवाबी मसनद प्राप्त करने के बाद मीरजाफर ने अंग्रेजों को तीस लाख टका (रुपया) देने का वायदा किया। युद्ध चलाने के लिए पाँच लाख टका और प्रतिमास के लिए मांग थी। इससे स्पष्ट होता है कि उस समय रुपये से सभी कुछ खरीदा जा सकता है। नवाब रुपये से बादियां खरीदते थे तो अंग्रेज रुपयों के बल पर नवाब का सिंहासन खरीद-बिक्री करते थे। आजकल की परिस्थितियों से उस समय की परिस्थितियाँ बहुत भिन्न नहीं थीं केवल लोगों की जागरूकता में अन्तर था।

स्वभावतः मीरजाफर अंग्रेजों की माँगें पूरी नहीं कर पाये। बीस लाख के ऊपर कर्मचारियों एवं अफसरों की व्यक्तिगत माँगें थीं नहीं तो वे धमकी देते थे।

मैं कलकत्ता कौन्सिल में आपके विरुद्ध शिकायत कर दूँगा।

अतः मीरजाफर के राज्य में माँग आय से अधिक थी। अतः राजा नन्दकुमार जैसे बुद्धिमान व्यक्ति को राजस्व मन्त्री चुना गया।

नन्दकुमार ने अंग्रेज व्यापारियों के अत्याचार कम करने का प्रयत्न किया। वास्तव में अंग्रेज व्यापारी बिना राजस्व दिये व्यापार चलाते थे एवं पूरा सरकारी राजस्व हड़प जाते थे। नन्दकुमार के जिन सब स्थानों पर अंग्रेजों के व्यापारियों एवं चाटुकारों ने कब्जा कर रखा था (नन्दकुमार ने) उन्हें मीरजाफर के स्वार्थ में हटा दिया। इससे अंग्रेज क्षुब्ध हो गये। उत्पादन हो नहीं रहा था। अंग्रेज व्यापारियों के अत्याचारों से नवाबों के राजकोष में रुपया नहीं आ पा रहा था। इसके ऊपर अंग्रेज कर्मचारियों की धन की लालसा निरन्तर बढ़ती गयी।

मीरजाफर को अब शासन में रुचि नहीं रह गयी थी, क्योंकि उसकी उम्र ७४ वर्ष की हो गयी थी एवं अंग्रेजों का प्रभुत्व बढ़ता जा रहा था। अंग्रेजों का शासन में निरन्तर हस्तक्षेप बढ़ता जा रहा था। यहाँ तक कि अंग्रेजों के विशेष अनुरोध पर मीरजाफर ने महाराजा दुर्लभराय को निजामत का दीवान बनाया किन्तु सभी क्षमता इस बार उन्होंने दुर्लभराय को नहीं दी, क्योंकि दुर्लभराय (अंग्रेजों का इत एवं) अंग्रेजों का आरंभ से खास आदमी रहा था। एक विश्वासघाती षड्यन्त्र में शामिल अपने साथी का कभी विश्वास नहीं करता है। अतः अनेकों विभागों की दीवानी उन्होंने नन्दकुमार के पास ही रहने दी।

नन्दकुमार को राजस्व व्यवस्था से अंग्रेज प्रभु बहुत ही असन्तुष्ट थे, क्योंकि वे किसी सिद्धान्त पर व शासन-व्यवस्था में विश्वास नहीं रखते थे। उनका उद्देश्य था कि जितना हो सके

नवाब से व्यक्तिगत लाभ के लिए रुपया लूटा जाये। अतः वे नन्दकुमार के कार्यों में त्रुटियाँ खोजने लगे। इतनी बड़ी केन्द्रीय शासन व्यवस्था में त्रुटियाँ ढूँढ़कर निकालना बहुत आसान कार्य है। अतः निहित स्वार्थ में लिप्त कुछ अंग्रेज बड़े-बड़े अफसरों ने यह अफवाह फैलायी कि नन्दकुमार ईस्ट इण्डिया कम्पनी एवं अंग्रेजों के स्वार्थों के विरुद्ध कार्य कर रहा है और अंग्रेजों को देश से बाहर निकालने का फिर से षड्यन्त्र कर रहा है। बस फिर क्या था ? यह नारा तो अंग्रेजों के लिए (काफी) चुम्बक का काम करता था। वे सभी नन्दकुमार के विरुद्ध हो गये एवं उसे हटाने की सोचने लगे।

१७६४ में भ्यान्सिटर्ट ने अंग्रेजों के अत्याचारों को देखकर त्यागपत्र दिया। ब्रिटेन में भी ईस्ट इण्डिया कम्पनी के कार्यों का लेखा-जोखा आरम्भ हो गया था एवं ब्रिटेन में तथा भारत में अंग्रेज जिस प्रकार निरंकुश एवं सिद्धान्त विहीन होकर धन-दौलत की लूट-खसोट कर रहे हैं स्थानीय राजाओं के मामलों में हस्तक्षेप कर रहे हैं एवं अनेकों के साथ विश्वासघात कर रहे हैं वह सम्पूर्ण अंग्रेज जाति के लिए कलंक है। अतः फिर से क्लाइव की भारत आने की आशा हुई। इस आशा से मीरजाफर ने ७४ वर्ष की उम्र में कलकत्ते की यात्रा की पर क्लाइव न आया एवं अपने नूर-ए-चश्म क्लाइव की चिन्ता में मीरजाफर ग्रस्त हो डूब गये। उल्टे कलकत्ते में मीरजाफर से कौंसिल ने कहा, "आपको मुर्शिदाबाद की शासन व्यवस्था भलीभांति करनी होगी। अभी हमारा अनेक राजस्व बाकी है। अनेकों हमारी मांगें

एवं आपके वायदे पूर्ण नहीं हुए हैं। अतः आप लौटकर तुरन्त हमारे लिए राजस्व की व्यवस्था करें अन्यथा हम कैसे विदेशियों के आक्रमण के खिलाफ आपके शासन की रक्षा कर सकते हैं।" मीरजाफर ने कहा—"आपके अंग्रेज व्यापा‍ी हमें कोई राजस्व नहीं देते हैं उसको देखकर अन्य हिन्दुस्तानी व्यापारियों ने भी राजस्व देना बन्द कर दिया है, क्योंकि उनका व्यापार ठप हो गया है। अंग्रेज व्यापारियों की दरें अच्छी हैं। दूसरे मैं तो पूरी आय आप लोगों को अर्पण कर देता हूँ। अब तो मेरे पास केवल ‍रा बड़ा हाड़ माँस है।" मीरजाफर के इस सत्य उत्तर से कौंसिल के सदस्य असंतुष्ट हुए एवं उन्होंने कहा, "क्या तुम फिर से चिन्तपुर, नेशनल-लाइब्रेरी एवं बेगसल कोर्ट में नजरबन्द होकर दिन काटना चाहते हो अथवा भागीरथी की मुर्शिदाबाद जाकर खुली हवा का सेवन करना चाहते हो? तो राजधानी लौट जाओ एवं हमारे लिए टाका की व्यवस्था करो। पूर्व में तो ऐसी समस्या कभी नहीं सुनी गयी।" मीरजाफर का राजधानी मुर्शिदाबाद एवं वहां के परिवेश से अति लगाव हो गया था।

अतः मीरजाफर "हाँ सरकार" कहकर वापिस आ गया पर उसकी आत्मा अंग्रेजों के इस व्यवहार को न सहन कर सकी। वह सभी समय सोचता था, "मेरी स्थिति तो एक नागरिक से भी गई गुजरी है जो कम से कम दो बार चैन की रोटी तो खाता है। मुझे तो एक हिजड़े से भी अधिक गुलामी करनी पड़ रड़ी है। क्या यही मेरी सईदी वंश की मर्यादा है।

पर वृद्धावस्था में वह भी शक्ति खो चुका था। अत: कलकत्ते से लौटकर उसने शासन का काम मुन्नी बेगम को सौंप दिया एवं मुन्नी बेगम से उसने कहा, "तुम तो मुझे दिन में पाँच बार अफीम के काले टुकड़े दे दिया करो एवं शासन की बागडोर तुम संभालो। मुन्नी बेगम एक समझदार एवं चालाक महिला थी। वह अंग्रेजों को राजस्व देने के साथ-साथ स्वयं का राजस्व वसूल कर लेती थी। जितना अंग्रेजों को रिश्वत भिजवाती थी उतना ही चोरी छिपे किन्तु बहुमूल्य हीरे जवाहरातों के रूप में स्वयं के पास छुपाकर रख लेती थी। अत: इन दोनों पाटों के बीच जनता का उत्पीड़न बढ़ गया क्योंकि जनता के सार्वजनिक हित में कुछ काम नहीं हो रहा था सिर्फ महल की एवं अंग्रेजों की तिजोरियाँ भरी जा रही थीं।

नवाब को इसी दुश्चिन्ता में कुष्ठ रोग भी हो गया।

कलकत्ते से लौटकर मीरजाफर ने जल्मोद्दौला को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया। कुष्ठ रोग के कष्ट से उसके शरीर के सभी अंग लाल से सादा पड़ रहे थे एवं सम्पूर्ण दिन उसके शरीर में जलन बनी रहती थी।

मुर्शिदाबाद राज्य के बड़े से बड़े डाक्टर एवं वैद्य आये पर उन्होंने कहा, "नवाब साहब, अभी तक कुष्ठ रोग की ठीक औषधि नहीं निकली है। अत: मैं आपको ठीक करने की गारंटी नहीं दे सकता हूँ।"

५

राज्य में नवाब के कुष्ठ रोग की चर्चा हो रही थी, सभी कह रहे थे, "नवाब ने विश्वासघात किया अंग्रेजों के हाथों हमारे शासन को सौंप दिया। प्रथम तो उन्हे इसका दुष्परिणाम नहीं भोगना पड़ा पर अब मरण शैया पर उन्हें यह कष्ट भोगना पड़ रहा है। वास्तव में मनुष्य के कार्यों का स्वर्ग-नरक यही संसार है। मनुष्य को अपनी करनी का फल (मनुष्य को) यहाँ से इस संसार से लेकर ही जाना पड़ेगा। अल्ला के दरबार में देरी हो सकती है पर अल्ला पापियों को माफ नहीं कर सकता।"

हिन्दुओं का कहना था, "यदि मीरजाफर को अभी फल नहीं मिलता मरणोपरान्त अवश्य ही वह नरक में जाता। चलो यहीं फल मिल गया।"

नवाब का वैद्य सभी को गला फाड़-फाड़ कर समझा रहा था, "कुष्ठ रोग एक व्याधि है एवं व्यक्ति के कर्म से इसका कोई सम्बन्ध नहीं है, क्योंकि यह स्थान की जलवायु पर निर्भर करती है।" "पर, लोकश्रुति को कौन पकड़ सकता है? नवाब की दुश्चिन्ता की खबर चारों ओर उड़ गयी थी। वैद्य और डाक्टर की इस बात को इनकार नहीं कर सका कि बीमारियाँ दुश्चिन्ता से बढ़ती हैं। सभी कह रहे थे, नवाब ने जिस प्रकार शासन हथियाया वह अन्यायपूर्ण था। इसके बाद नवाब ने प्रचुर धन कमाया। सभी प्रकार का ऐश आराम किया एवं अपने परिवार के लोगों को अन्याय करने दिया पर शासन क्षमता के सामने समय भी उसका गुलाम हो गया पर नवाब समय एवं कर्मफल को सभी समय के लिए अपना गुलाम बना कर नहीं रख सकते। सभी का नवाब ऊपर वाला है एवं वह सभी का हिसाब किताब रखता है एवं ठीक समय आने पर उचित दंड भी देता।"

नवाब के प्रमुख वैद्य ने कहा, ‘नवाब साहब, शायद आप युद्ध में जाने के पूर्व किरीटेश्वरी देवी के दर्शन करते थे। अब आपको रोग से वहीं बचा सकती हैं। अतः आपको उन्हें ही खुश करना पड़ेगा।"

मीरजाफर ने कहा, "वैद्यजी, मेरा जीवन में कभी भी हिन्दुओं से झगड़ा नहीं हुआ। उन्होंने मेरे साथ कभी भी विश्वासघात नहीं किया पर मैं क्या करूँ? हमारे मुसलमान भाई ही एक दूसरे के गले काटने में लगे रहते हैं। यदि हमारी कौम रचनात्मक कार्यों में शक्ति लगाये तो आज हम विश्व में राज्य कर सकते थे। हां, यह बात सत्य है कि किरीटेश्वरी देवी के आशीर्वाद से मैं आज तक किसी युद्ध में पराजित नहीं हुआ। अतः मुझे विश्वास है कि देवी जीवन की इस आखिरी बेला में भी मुझे पराजित न होने देंगी।"

नन्दकुमार मीरजाफर के इलाज की पूरी व्यवस्था करता था। एक विशुद्ध हिन्दू की भाँति नवाब बाजरा से किरीटेश्वरी देवी के मुर्शिदाबाद के पार भागीरथी को पार करके एक नाले के माध्यम से देवी के मन्दिर में प्रायः प्रतिदिन दर्शनार्थ जाते थे एवं वहां पूजा देते थे। एक दिन नवाब को स्वप्न हुआ, "यदि तुम देवी के स्थान के लिये वहाँ एक तालाब की खुदाई करवाओ एवं यात्रियों के रुकने की व्यवस्था आदि करो तो तुम रोग-मुक्त हो सकते हो।"

बस क्या था। राजमहल का धन किरीटेश्वरी देवी के मन्दिर के संस्कार में लगा दिया गया। पास में और देवी की भी स्थापना हुई। शंकर भगवान भी विराजमान हुए। अब नवाब का मुख्य काम किरीटेश्वरी के दर्शन करना रह गया। शासन का काम मुन्नी बेगम एवं नजमोद्दौला देखने लगे।

किंवदंती है कि नवाब का कुष्ठ रोग ठीक हो गया पर अभी भी कुछ लोग नवाब के ठीक होने में सन्देह प्रकट करते हैं, क्योंकि नवाब की तुरन्त बाद में अर्थात् ५ फरवरी १९६५ को मृत्यु हो गयी। पर इसमें सन्देह नहीं कि मीरजाफर हिन्दुओं का बन्धु था एवं हिन्दू सहायकों को बहुत चाहता था। प्रजा एवं नन्दकुमार ने मीरजाफर को मरते समय किरीटेश्वरी देवी का चरणामृत पिलाया। कुछ हिन्दू एवं कुछ मुसलमानों के विरोध के बावजूद नवाब ने अपनी पूजा अर्चना बन्द न की।

मृत्यु के पूर्व मीरजाफर ने अपने नूर-ए-चश्म एवं आँख के हीरे क्लाइव को पाँच लाख टाका एवं हीरे जवाहरात दे दिये। पर उनका प्रिय क्लाइव रिश्वत खाकर एक बड़ा व्यक्ति हो चुका था एवं उसकी आमदनी उस समय वार्षिक चालीस हजार पौंड थी। अतः क्लाइव ने उस रुपये से गोरी सेना के कल्याण के लिये एक फंड तैयार किया जिससे गोरे गरीब एवं रिटायर सैनिकों के परिवार के लोगों को सहायता दी जाती थी।

नवाब के नजमोद्दौला को उत्तराधिकारी घोषित करने के लिए अंग्रेज क्षुब्ध थे क्योंकि नवाब ने अंग्रेजों से इस विषय में राय नहीं ली थी।

मीरजाफर की मृत्यु के समय नजमोद्दौला वयस्क था। वह मुन्नीबाई का बड़ा लड़का था। नया रेजीडेण्ट स्पेन्सर घूस लेना नहीं जानता था पर पैसा कमाने की सभी कोशिश में थे। भारत सोने की चिड़िया था एवं सभी चिड़िया का एक-एक पख लेना चाहते थे। नन्दकुमार ने उनके लिए दिल्ली से सूबेदारी की

मसनद लाने की व्यवस्था की एवं मृत्यु समय नवाब का स्वार्थ देखने के कारण वे अंग्रेजों के कोपभाजन सिद्ध हुए। सूबेदारी मसनद अंग्रेजों से न परामर्श करके लाने के लिए अंग्रेज क्षुब्ध थे। कुछ अंग्रेज प्रतिनिधि ही कलकत्ते से एवं उन्होंने नवाब एवं रेजा खाँ से १,४०,००० पाउण्ड वसूल किये। यह रुपया कौंसिल के सदस्यों में बाँटा गया।

गवर्नर स्पेन्सर ने २३,३३३ पाउण्ड रिश्वत में लिये एवं दूसरे प्रत्येक सदस्य ने १३,००० से २०,००० तक पाउण्ड लिये और मेजर मुनरो ने १६,००० पाउण्ड लिये।

दीवानी का लोभ दिखाकर दुर्लभराय एवं नन्दकुमार दोनों से अलग-अलग उन्होंने बहुत रुपया रिश्वत लिया।

नन्दकुमार ने नजमोद्दौला को समझाया, "अंग्रेजों को राजस्व देने से लाभ नहीं, क्योंकि राजस्व देने के बाद भी व्यक्तिगत रूप से सदस्य सभी सन्तुष्ट नहीं होंगे एवं वे कुछ न कुछ नुक्ताचीनी करते ही रहते हैं। अतः रिश्वत देना ही ठीक है, क्योंकि हमारे पास से पैसा कम जायेगा लेकिन काम अधिक होगा। पर वे आजकल अंग्रेज दोनों पक्षों से रिश्वत ले रहे हैं जिससे समस्त अंग्रेज जाति का भारत में नाम बदनाम हो रहा है एवं घूस लेकर भी वे काम नहीं करते यह और भी समस्त अंग्रेज जाति के लिए निन्दा का विषय है। अंग्रेज प्रजा भी अपने अंग्रेज राजाओं की ओर नहीं देखती, क्योंकि वे भारत के नवाबों, रजवाड़ों एवं राजाओं से भी अधिक ऐश्वर्य एवं भोग-विलास में लिप्त हैं पर उन्होंने सभी अंग्रेज व्यापारियों को मनचाहे व्यापार की छूट दे रखी है। इससे अंग्रेजों का सामान्य व्यापारी भी खुशहाल एवं मस्त है पर जनता इस शोषण में पिसी जा रही है। जनता को दूर-दूर तक न्याय की सूर्य किरण दृष्टिगोचर नहीं हो पा रही है।"

अन्त में रेजा खाँ की योग्यता एवं उसकी थैली का भार देखकर अंग्रेजों ने नन्दकुमार के स्थान पर रेजा खाँ को दीवान नियुक्त किया। कम्पनी के लोग मसनद पर बैठाने के दिन उपस्थित थे।

सदस्य जानस्टन के भाई जो कम्पनी के सदस्य नहीं थे, उन्होंने भी रिश्वत का रुपया लिया जिसे वे "खैरियत खैराती" कहते थे। बाहर की रक्षा का भार कम्पनी ने लिया और तय हुआ कि पाँच लाख रुपया प्रति माह नवाब कम्पनी को देंगे। मिस्टर फ्रान्सिस साइकस ने कहा कि नवाब की सेना पर वर्ष में १८ लाख रुपया खर्च करने से क्या लाभ जब कम्पनी ने रक्षा का भार ले लिया है एवं नवाब एवं दीवान रेजा खाँ राजी हो गये। नवाब नाजिम की क्षमता धीरे-धीरे कम करके कम्पनी बंगाल-बिहार-उड़ीसा की शासक बन गई। कम्पनी के प्रवक्ता ने कहा, "नजमोद्दौला की अबोधता एवं अल्पवयस्कता को देखते हुए सभी सरकारी काम उसके पास नहीं रहेंगे।

ग्रे साहब को कुछ कम घूस मिली एवं वे मुर्शिदाबाद में थे। अतः उन्होंने लिखा कि रेजा खाँ को दीवान बनाने की आवश्यकता नहीं है, नजमोद्दौला काम चलाने योग्य है। अर्थात् जिसको जैसी घूस मिलती थी उसकी विचारधारा घूस के अनुपात में ही बाहर निकलती थी।

नन्दकुमार एवं उनके दामाद को कलकत्ते में सिपाहियों के पहरे में नजरबन्द रखा गया। बाद में न्यायमूर्ति से बन्धुता के आधार पर गवर्नर जनरल वारेन हेस्टिंग्ज ने कानून के सभी मानदण्डों को एक कोने में रखकर नन्दकुमार जैसे स्वामिभक्त एवं देशभक्त व्यक्ति के विरुद्ध और कोई अपराध न पाकर

धोखाधड़ी एवं कागज बदलने के लिये मृत्यु दण्ड दिलवाया जो कि आज तक संसार के विधि के इतिहास में एक काला अध्याय है।

१७६५ में "बैरन क्लाइव आफ प्लासी" भारत आये। उन्होंने आदेश दिया कि कम्पनी का कोई भी कर्मचारी किसी के पास से ४००० रुपये से अधिक का उपहार नहीं ले सकता था पर यह तो सभी आदेश पुस्तकों में लिखे रहते हैं एवं उन्हें पार करना लोग आदेश आने के पूर्व ही खोज लेते हैं।

क्लाइव ने आगे कहा कि एक हजार से अधिक उपहार होने से कलकत्ता सूचना देनी होगी। सभी कर्मचारी असंतुष्ट हुये पर क्लाइव के भय से कुछ न बोल सके। क्लाइव भी जानता था कि उसको प्रशासन को ठीक करने के लिये बुलाया गया था, क्योंकि जनता अंग्रेजों से काफी असन्तुष्ट थी एवं किसी भी दिन अंग्रेजों के विरुद्ध एक बड़ी क्रांति हो सकती थी। अतः एक योग्य सैनिक एवं दूरदर्शी प्रशासन के हिसाब से वह जानता था कि किसी भी प्रशासन को अधिक समय तक जनता के कोप के सामने नहीं चलाया जा सकता। अंग्रेजों को जनता का विश्वासपात्र बनना ही होगा।

क्लाइव को अपने पिता मीरजाफर परममित्र एवं मीरजाफर परिवार का हितैषी समझ कर नजमाउद्दौला ने कलकत्ते आकर सभी बखान किया एवं क्लाइव ने एक ही रिपोर्ट भेज दी जिससे जान्स्टन नौकरी छोड़कर चले गये। विलियम व्हीलर्स ने कोषागार में गड़बड़ी करने के कारण आत्महत्या कर ली।

क्लाइव मुर्शिदाबाद आये एवं रेजा खाँ के साथ उन्होंने अंग्रेजों के परम भक्त महाराजा दुर्लभराय एवं जगतसेठ मूशलचाँद को मंत्रीसभा में शामिल करवा दिया। नन्दकुमार एवं उसके दामाद को मुक्त कर दिया गया।

रायदुर्लभ को क्लाइव का वजीर कहा जाता है। क्लाइव अयोध्या के नवाब शुजाउद्दौला के पास गये। डरकर शुजाउद्दौला ने रायदुर्लभ से स्क्रैफ्ट के लिये बरदानपुर में जमीन भी खरीदी जो दूसरे नाम मृत्युंजय के नाम से चलती रही संधि कर ली एवं अयोध्या के नवाब ने पचास लाख रुपये अंग्रेजों को दिये। अंग्रेजों ने उनका राज्य उनको छोड़ दिया। इसके पश्चात् इलाहाबाद बादशाह के माध्यम से शाहआलम के साथ भी एक सन्धि की।

बादशाह ने ईस्ट इंडिया कम्पनी को बंगाल, बिहार एवं उड़ीसा की दीवानी दी एवं कम्पनी ने बादशाह को २६ लाख रुपया राजस्व प्रति वर्ष देने का वायदा किया। 'यह कार्य इतना शीघ्र पूरा हो गया कि एक गधा अथवा गाय बिक्री करने में भी उससे अधिक समय लगता है।''

सभी को क्लाइव की तलवार का भय था मानो वह उनके सिर के पास ही लटक रही हो।

रेजिडेन्ट समकस ने सन्धि की कि कम्पनी नजमाउद्दौला को वर्ष में ५३,८६,१६१ रुपया देगी एवं शासन रेजा खां, दुर्लभराय एवं जगतसेठ चलायेंगे। नवाब राजी हो गये। नवाब में समझ नहीं थी, कोई राष्ट्रीय एवं स्वाधीनता की दृष्टि माँगी नहीं थी। नजमाउद्दौला अदूरदर्शी नवाब था। नवाब ने सोचा कि अब देवीसिंह जैसे लोगों को रखकर राजस्व रुपया उठाने से राज्य चलाने की चिन्ता न रहेगी। नजमाउद्दौला ने १०६ परवाना कम्पनी के नाम दिये एवं कम्पनी को जमींदारी मिल गयी। कलकत्ते में एक टकसाल खोलने की आज्ञा भी अंग्रेजों को मिल गयी।

तीन करोड़ तीस लाख की स्वतंत्र एवं स्वावलम्बी आय को छोड़कर ५३ लाख रुपये सुरक्षित वजीफा पाकर क्लाइव के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करते हुए नजमाउद्दौला ने कहा, "धन्यवाद, अब जितनी नचाना चाहते हैं नचाऊँगा।"

जब मुर्शिदाबाद को छोड़कर क्लाइव लखनऊ जा रहे थे तब क्लाइव के सम्मान में नवाब ने एक खाना पीना दिया। उसमें ठंड लगने के बाद ४ मई को नवाब की मृत्यु हो गई।

उसके बाद उसका छोटा सोलह वर्षीय भाई सइफउद्दौला गद्दी पर बैठा एवं एक नूतन संधि में अंग्रेजों ने उसे ४१ लाख एवं ८६ हजार रुपये देने का वायदा किया।

१७६९ में मुर्शिदाबाद में महामारी हुई एवं ६३००० लोग मर गये। सइफउद्दौला भी मारा गया। लोग मुर्शिदाबाद छोड़ने लगे क्योंकि नवाब का प्रभुत्व कम हो गया था एवं व्यवसाय एवं वाणिज्य का क्षेत्र भी कम हो गया था। महामारी ने मुर्शिदाबाद के पतन में तोप में ईंधन का काम किया। सभी का मत था कि गुलाम नवाब व्यवसाय अथवा उद्योग को प्रोत्साहन नहीं दे सकता था। नवाब का क्षेत्र खुले विस्तृत आसमान एवं बंगाल, बिहार, उड़ीसा की शस्य श्यामला धरती से सिमटकर मुर्शिदाबाद जिसे आजकल लालबाग कहा जाता है, के महलों में आ गया जिनके नाम थे मसूरगंज पैलेस, मोतीझील महल, हीरा झील महल एवं सबसे बाद में हजरतअली महल। नवाबों के सिमटते हुए अधिकारों एवं शक्ति को देखकर भागीरथी नदी ने भी आँसू बहाये एवं वह भी इन महलों के ध्वंस में लग गयी। उस भागीरथी ने जो हिमालय से गंगासागर तक देश को समूह बनाने के लिए बह रही थी, समझा कि मुर्शिदाबाद के नवाबों की अक्षमता, विश्वासघात, लापरवाही एवं इन्द्रिय लोलुपता से

देश की धरती अब शस्य श्यामला नहीं रहेगी। अंग्रेज देश का धन बाहर ले जायेंगे एवं स्वतन्त्र भागीरथी पर भी शासन करेंगे। अतः उसने अपनी दिशा बदल दी एवं प्रथम धक्के में ही हीरा झील महल को आत्मसात कर लिया जिसमें निर्माण को लेकर सिराजुद्दौला का मुर्शिदाबाद के प्रिय नवाब अलीवर्दी से मतभेद हुआ एवं जिसने सभी दरबारियों को सिराज के विरुद्ध खड़ा किया। इसके पश्चात भागीरथी ने "नमक हराम ड्योढ़ी" अर्थात् मीरजाफर के प्रिय मसूरगंज महल को आत्मसात किया एवं दोनों महल नदी के गर्भ में इस प्रकार विलीन हो गये कि आज उनके चिह्न पाना दुष्कर है एवं मोतीझील महल को भी एक अपनी शाखा भेजकर नीचे गिरा दिया।

पर क्या भागीरथी को यह कार्य अच्छा लग रहा था ? नहीं। कल्याण प्रदायिनी भागीरथी आज ध्वंसकारिणी हो रही थी। पर भागीरथी के आँसू नवाबों के इन कुकृत्यों पर बह रहे थे। उसने अनेक बहुत सहन किया – शांत एवं सुश्रृंखल तरीके से। पर नवाब अपनी हरकतों कुकृत्यों से बाज न आये। अतः एक कल्याणदायिनी ध्वंसकारिणी बन गयी। भागीरथी के साथ सभी देश प्रेमी लोग भारत के भावी भविष्य के विषय में आशंकित थे एवं ज्ञात होता था कि भारत की स्वाधीनता जैसे अंग्रेजों को शांतिपूर्वक हस्तान्तरित हो रही थी। मुर्शिदाबाद के नवाबों ने तो पेंशन और सुरक्षित वजीफों के लिए अंग्रेजों के पास उसे पहले से ही गिरवी रख दिया था।

मुन्नी बेगम भी नवाबों के सारहीन कार्यों को देखकर रो पड़ी। उनका तो माँ का हृदय था। अतः उन्होंने मीरजाफर के वंश की भावी संतानों को शिक्षा-दीक्षा एवं भरण-पोषण के लिए अपने संग्रह किये हुए लाखों रुपये एक ट्रस्ट में रख दिए जिससे

नवाब बहादुर इंस्टिट्यूट (स्कूल) एवं छात्रावास आज भी चलते हैं जिसमें नवाब के वंशजों के लिए सभी मुफ्त हैं। वो भी क्या? नवाब ने न उनके वंशजों ने कभी काम तो किया नहीं न काम करना सीखा। अतः इसके अतिरिक्त क्या हल हो सकता था।

सइफउद्दौला के बाद मीरजाफर का छोटा लड़का मुबारक-उद्दौला गद्दी पर बैठा पर रेजा खां के पास प्रशासन रहा क्योंकि वह एक पश्चिमी शिक्षा में शिक्षित एवं योग्य व्यक्ति था। देश की भयावह परिस्थिति एवं मँहगाई को देखकर रेजा खां ने चावल के रूप में तनख्वाह देने की सिफारिश की पर काला-बाजारी चलती रही। खान ने कंपनी के चावल के व्यापार के रोक की सिफारिश की पर उनकी एक बात न सुनी गयी।

मुबारकउद्दौला भी अबोध एवं वयस्क था। अतः उसकी मां बब्बू बेगम अभिभावक हो सकती थी पर मुन्नी बेगम योग्य एवं पैसे वाली थी। अतः रिश्वत देकर मुन्नी बेगम अभिभावक बन गयी एवं वास्तव में बचे खुचे राज्य एवं शासन की बागडोर मुन्नीबाई एवं उनके दल के हाथों चली गयी।

मुन्नी बेगम से रुपयों का हिसाब-किताब लिया गया एवं उन्होंने सत्य कह दिया कि वारेन हेस्टिंग्ज ने घूस के रूप में दिया था। नन्दकुमार से (की) मुन्नी बेगम को दी गयी इस सलाह के कारण वारेन हेस्टिंग्ज उसपर क्रुद्ध हो गये।

भारत में अंग्रेजी राज को प्रतिष्ठाता क्लाइव फिर से अपने लगाये पौधे को सींचकर हरा-भरा देखकर फिर भारत से चला गया।

१७७२ में नवाब मुबारकउद्दौला को मास में १२३३३३ टाका, मुन्नी बेगम को ८३३३ टाका एवं जगतसेठ को ८७५० टाका

स्टाइपेण्ड मिलती रहे पर रुपये नियमित रूप से नहीं मिलते थे। शनैः-शनैः रुपयों का भुगतान इतना अनियमित हो गया कि नवाब के यहाँ नाच गाना तो बन्द हो ही गया, जिसकी सुरक्षा के लिए नवाब पेंशन/वजीफा के प्रस्ताव पर सहमत हुए थे साथ में नवाब के वंश के सदस्यों को खाने के लाले पड़ गये।

मुर्शिदाबाद के नवाब भूल गये कि राजनीतिक क्षमता से ही आर्थिक क्षमता आती है एवं आर्थिक क्षमता के बिना राज-नैतिक क्षमता बनाये रखना असम्भव है।

इस प्रकार मीरजाफर के वंश का शनैः-शनैः सूर्यास्त हो गया।

□

: १२ :

मीरजाफर के शासन के शीघ्र पतन का कारण था कि मीरजाफर अपने जीवनकाल में कोई स्थायी शासन तन्त्र न स्थापित कर सके। उनका उद्देश्य था किसी प्रकार सामने आयी समस्या का समाधान करना। इसके अतिरिक्त उनकी मसनद षड्यन्त्र की भित्ति पर स्थापित हुई थी। इस प्रकार के कार्य के कारण कर्मचारियों एवं जनता में शासन के प्रति स्वामिभक्ति एवं एकाग्रता नहीं आती है। फिर धार्मिक स्वार्थ थे, जातीय स्वार्थ थे जिनकी परिणति व्यक्तिगत स्वार्थों में होती थी। प्रत्येक नवाब को अच्छे एवं विलासी जीवन से मतलब था। यही कारण था कि नवाब चाहते हुए भी रायदुर्लभ एवं जगतसेठों का महत्व कम नहीं कर सके।

□

मीरजाफर की शासन व्यवस्था से स्पष्ट है कि शासन में अर्थतन्त्र बहुत ही महत्वपूर्ण है। कोई भी नवाब राजस्व की ओर ध्यान नहीं देता था। इसका फल यह हुआ कि वे सब समय अर्थ-मन्त्री के कठपुतले बने रहते थे। शनैः-शनैः उन्होंने सभी को पृथक् जागीरें दे दीं। वे लोग सेना रखते थे पर इससे सेना की स्वामिभक्ति नवाब के प्रति नहीं रह गयी अपितु अपने वेतन-मालिक के प्रति हो गयी। सामाजिक जीवन में तो कोई राष्ट्रीय दृष्टिकोण नहीं ही था, सेना में भी इस दृष्टि से भंगी मन्त्री का अभाव हो गया। सेना का संकट के समय वेतन की माँगों को लेकर विद्रोह करना इस अपूर्ण व्यवस्था का द्योतक है।

नवाबों की व्यक्तिगत वीरता एवं शौर्य से विशेषतः मीरजाफर एवं मीरन के शौर्य पराक्रम से कोई इनकार नहीं कर सकता। पर, शासन अधिकता से जनता व्यक्तिगत शौर्य के अतिरिक्त भी यह आशा करती है कि वह दूसरे लोगों में भी यह भाव पैदा करें। एक व्यक्ति के बहादुर एवं कार्यशील होने से क्या होता है। शासनकर्ता का काम है नीचे वालों का नियन्त्रण एवं उनकी देख-रेख। किन्तु ऐसा ज्ञात होता है कि मुर्शिदाबाद की मसनद में ऊर्ध्व तन्त्र था। नवाब का सीधा सम्बन्ध नीचे वाले से न था। अतः नवाब कुछ भी न देख सके। नवाब को जो समय दूसरों अर्थात् अंग्रेजों की आवभगत एवं गुलामी से खाली मिलता था, उसे वे विलासिता में गुजार देते थे।

अतः नीचे वाले कर्मचारी एवं अंग्रेज जनता के शोषण एवं उत्पीड़न में लगे रहे। अंग्रेजों ने भी नवाबों के समय जो किया वह अंग्रेज जाति के लिये शर्म का विषय है। अकेले क्लाइव ने मीरजाफर से ३३ लाख रुपये रिश्वत के लिए। यही कारण था कि मुर्शिदाबाद जो उस समय लंदन से भी एक बड़ा शहर था, बाद में एक छोटा सा शहर रह गया। यहाँ तक आजकल तो यह जिला शहर से भी एक छोटा शहर है।

नवाबों का वजीफा अर्थात् नियमित आय के लिए अंग्रेजों को दीवानी देना एक भयंकर भूल थी जिसने अन्त में भारत को अंग्रेजों का गुलाम बना दिया। पर प्लासी के युद्ध में मीरजाफर का पूर्ण विश्वासघात था यह विश्वास नहीं किया जा सकता। जिस प्रशासन में पुराने एवं वयस्क लोगों का असम्मान किया जाता है वे प्रशासन फूट से टूट जाते हैं।

सिराज ने प्रथम स्वयं अलीवर्दी के साथ अन्याय किया एवं अपने भाई को मार डाला। अतः प्रथम उसे जनता का समर्थन लेना चाहिए था। मीरजाफर, जगतसेठ, रायदुर्लभ दल प्रशासन में दृढ़ता एवं लकीर के फकीर के द्योतक हैं। उसका सिराज के पूर्व पन्द्रह बीस वर्षों का जनता के बीच में कार्य था। अतः स्वाभाविक रूप से एक अंश जनता का उनसे उपकृत था। इसलिए सिराज ने ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न कर लीं कि प्लासी के युद्ध में सभी शक्तिशाली लोग उसके विरुद्ध हो गये। उस समय कोई राष्ट्रीय दृष्टिकोण नहीं था। अतः कोई अपने कार्य के भावी परिणामों का समग्र देश पर प्रभाव की चिन्ता नहीं करता था एवं दूर के परिणामों को भी नहीं देखता था। अतः सिराज द्वारा मीरजाफर जैसे पुराने एवं योग्य सेनापति के अपमान से सभी क्षुब्ध थे। यद्यपि रानी भवानी जैसी भी कुछ आवाजें थीं जिन्होंने सिराज से घोर व्यक्तिगत दुश्मनी होते हुए भी देश के स्वार्थ में सिराज को समर्थन देने की सलाह दी पर वह आवाज धीमी पड़ गयी। व्यक्तिगत मान-अपमान एवं उम्र की बातें आगे आ गयीं। अतः देश की परतन्त्रता के बीज स्वयं बादशाह सिराज ने बोये। आज भी प्रशाशन में व्यक्तिगत प्रशासन का अत्यन्त महत्व है। अच्छा व्यवहार, सुमधुर संभाषण एवं उम्र का सम्मान करना एक कुशल प्रशासक का कर्तव्य है। पर सिराज से सभी को कहा था कि वह एक दिन उन्हीं की बहू-बेटियों के पीछे पड़ेगा। इस प्रकार का यदि उच्चतम प्रशासन होगा तो नीचे वाले निश्चय षड्यंत्र के बीज बोते रहेंगे। उच्च प्रशासक को न्यायप्रिय होना चाहिए एवं सिद्धान्तों के अनुकूल कार्य करना चाहिए। 'व्यक्तिगत अहम्' की सत्यता आज भी उतनी ही है जितनी मीरजाफर के समय थी। यद्यपि समाज के विकास के साथ यह कम होना चाहिए।

आजकल भी यह देखकर आश्चर्य होता है कि प्रशासन में निहित व्यक्ति 'व्यक्तिगत अहम्' का पुष्ट पोषण कर रहे हैं अथवा प्रशासन या संस्था में निहित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए सब कुछ छोड़कर लगे हैं। वह दिन ही आदर्श होगा जब सभी राष्ट्रीय स्वार्थों की पूर्ति के लिए व्यक्तिगत अहम् एवं व्यक्तिगत अपमान की बलि देंगे। तब हम कह सकेंगे कि हमारा उद्देश्य समष्टिगत है न कि व्यक्तिगत।

आजकल कार्यलियों में भी देखने को मिलता है कि यदि किसी से कुछ भी अप्रिय बात कही जाये तो वह उच्च अधिकारी के पीछे हाथ धोकर पड़ जाता है चाहे बाद में उसकी एवं संस्था की कितनी ही क्षति हो। यह एक देश एवं समाज के पिछड़ेपन की निशानी है। कभी कभी वह इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए प्रशासन के शत्रुओं के साथ षड्यंत्र करने लगता है एवं विश्वास-घाती हो जाता है। क्या आज भी राष्ट्रीय चेतना एवं राष्ट्रीय मूल्यों का अभाव नहीं है?

मीरजाफर एवं उसके वंशजों के प्रशासन में इन्द्र के प्रशासन एवं रावण के प्रशासन का योगदान था, अर्थात् इन्द्र की भाँति नवाब जीवन की भौतिकता में लीन रहते थे एवं जब समस्या आती थी तो अंग्रेजों के पीछे दौड़ पड़ते थे। अतः अंग्रेज शनैः शनैः शक्तिशाली हो गये। उनके प्रशासन में व्यक्तिगत अहम् चरम था एवं उससे वे समझौता नहीं कर सकते थे न कोई बुद्धि की सलाह सुनने को राजी थे। जैसा रावण के शासन तन्त्र में देखा जाता है। वे दधीचि की भाँति शासन तन्त्र के लिए बलिदान करने को राजी नहीं थे। अतः वे अंग्रेजों के मुहर बन गये। वे यह भूल गये कि दीवानी क्षमता अंग्रेजों को देकर वे अंग्रेजों के 'हाँ' लोग हो जायेंगे। वे यह भूल गये कि उन्हें पृथ्वी-राज की भांति भूल नहीं करनी चाहिए और अंग्रेजों को देश में स्थापित होने पर उनसे लड़ना नहीं चाहिए अपितु प्रारम्भ में

ही उन्हें खदेड़ देना चाहिए था। अपनी भूमि पर यदि हम लड़ें तो अवश्य ही हमारी क्षति अधिक होगी।

मीरजाफर यद्यपि व्यक्तिगत आदतों में खराब नहीं था पर वह यह भूल गया कि प्रशासक को स्वयम् तो अच्छा होना ही चाहिए तथा यह भी देखना चाहिए कि उसे जनता भी कर्तव्य-परायण एवं चरित्रवान समझती है। मीरजाफर स्वयं इतना दुर्बल व्यक्ति था कि वह अपने लड़के एवं बेगमों पर नियन्त्रण न कर सका। लड़के मीरन ने जहाँ औरतों के साथ अन्याय करके जनता की सहानुभूति खोने में मीरजाफर की सहायता की वहाँ बेगमों ने धन जोड़कर शासन में दुर्नीति एवं भ्रष्टाचार को बढ़ाव' दिया। यदि उच्च प्रशासन स्वय अपने भविष्य की अनिश्चितता के कारण राज्य से धन समेटना आरम्भ करे तो पीछे स्तर तक भ्रष्टाचार का नियन्त्रण कभी नहीं हो सकता। वह भ्रष्टाचार तन्त्र हो जायेगा। अंग्रेजों ने 'उपहार-संस्कृति' नवाबों से सीखी पर वह इसमें इतना आगे बढ़ गये कि उस प्रकार का भ्रष्टाचार इति 'ास में और कहीं देखने को नहीं मिलता। छोटी विचारधारा प्रकट करने के लिए भी घूस की आवश्यकता पड़ती थी।

क्या आज भी हम मीरजाफर से कुछ भी नहीं सीख सकते हैं? मैं सोचता हूँ कि आजकल मीरजाफर और किसी भी समय से अधिक उपयोगी है। हमें यदि समाज एवं देश को आगे बढ़ाना है तो मीरजाफरों को पैदा होने से रोकना पड़ेगा एवं मीरजाफर के तंत्र के दुर्गुणों को अपने से दूर रखना पड़ेगा अन्यथा हमारे समाज पर एक दिन भागीरथी आँसू बहायेगी।

☐ समाप्त ☐

